ॐ

तत्सत् परमात्मायनमः।

मङ्गल-प्रकाश।

जिसको

श्री युत मंगल दास

बिहार निवासी ने

सर्व मनुष्यों के ज्ञानोदय और मंगलोदय और सत्योपदेश हेतु प्रकाशित किया।

सम्बत १९४८

"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर।

साहब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित।

१८९१.

...र २५० पुस्तक

भूमिका ।

इस पुस्तक के रचने का केवल यही प्रयोजन है कि सज्जन जन इसको विचार कर मूर्खों को और निर्दई मांसहारियों को उपदेश करें जिस्से उन के चित्त में दया उपजे और सर्व जीवों की रक्षा होय और विद्या अविद्या का ज्ञान हो कर सर्व साधारण को आनन्द होय सज्जन जन और महात्माओं से यही प्रार्थना है कि मेरे शुद्ध अशुद्ध पर ध्यान न दें किन्तु मेरे तातपर्य्य को विचारें जिस्से मेरा परिश्रम सुफल होय ।

प्रकाशक

सब भागा तब लौ लागा निज रूप पाई तब सब दोबधा भागा भाई तब सब जीवों से किया मिताई देखा सब घट एके भाई ताते भ्रम सब गया नसाई यह सब ज्ञान गुरु सो पाई तब यह पारख आया भाई तब यह हंसा परमपद पाई ॥

सत्तगुरु का बचन ।

सतगुरु का उपदेश यह है नित्य अनित्य का बिचार करना नित्य अनित्य यह है (बिचार करना) आत्मा सत्य है देह आदिक असत हैं ज्ञान यह है सत असत का बिचार करना भला बुरा बस्तु को जानना माया मोह मद अहंकार लोभ आदिक इंद्रिय का त्याग करना नित सतसंग करना सतसंग यह है सतबस्तु का बिचार करना निश्चय करना सतबस्तु का ज्ञान करना सतबस्तु क्या है केवल आत्मा सत है सतगुरु का

ॐ श्रीगणेशायनमः ।

मङ्गल-प्रकाश ।

प्रेमपदावली ।

दो० कहि कहि गय कवि भूप,
तहां मोर कहबो बृथा ।
तद्यपि सुमत अनूप,
बिना कहे रहि जात नहिं ॥

अस्तुति सतगुरु जी की ।

सत्तगुरु दयाल सदा कृपाल आनंद मूरति प्रकाश रूप चिन्ता हरण संसै- हरन परम आनंद संतन सुखदाई जन प्रण धारी संतन हितकारी सब जीवन को सुखदाई गुरु रूप प्रगटे जीवन को बोधे ज्ञान उपदेशे जीव चेताई कियो अपना मेंटबो सब जीवों का कल्पना संत का भेष दियो अपना ज्ञान तब जागा भर्म

यह उपदेश है आत्मा को चीन्हो तो आवागवन से छुट्टी पावो फिर चौरासी लच्छ के जोनि में न आवो ।

सत्तगुरु का उपदेश यह है ।

सतसंग में जाने से यह ग्यान प्राप्त होता है तातें सतसंग करना चित्त प्रसन्न आनंद रखना बैष्णव कर्म करना उज्जल दसा सो रहना हिंसा आदिक नहीं करना जीवजन्तु पर दया रखना सुगम परमपद पाने का राह है गुरुमुख होना गुरु का उपदेश मानना बिबेक सो काम करना किसी सो बैर बिरोध न करना किसी को दुर्बचन नहीं कहना प्रेम सो बोलना ।

दोहा ।

जैसा हिय चित मन करे,
वैसा होय हो जाय ।
निस दिन ब्रह्म बिचार ले,

जीव ब्रह्म हो जाय ॥
कृम भौंरी चित मन किवो,
कृम भौंरी हो जाय ।
जो निज सतसंगत करे,
सहज मुक्त हो जाय ॥

पाती ।

सतगुरु का उपदेश यह है सच्चा बोलना झूठा नहीं बोलना सतसुकृत सों रहना कुकर्म छोड़ देने सों आत्मा सुद्ध रूप होता है तब ब्रह्म सरूप होता तब आनंद प्राप्त होता है तब कल्पना और बिलपना सो निवृत्त हो जाता है फिर यह भवसागर में नहीं आता है बड़ा आनंद में प्राप्त होता है। सतगुरु का बचन है।

दोहा ।

दुखी न काहू कीजिये,
आप दुखी ना होए ।

जो चाहे सुख जीव को,
ले सतगुरु मत सोए ॥ १ ॥
सभ घट देखो आत्मा,
एकहि रस भरपूर ।
जैसे जल आकास का,
सुरसरि मिलि यक नूर ॥ २ ॥
सब घट देखो जीव है,
चित आतम भरपूर ।
एक ऊष सो होत है,
चीनी सक्कर गूर ॥३॥
जिउ बिन जिउ जीवत नहीं,
जिउ को जिउ प्रतिपाल ।
संत दया पालन करें,
अंकुर करत अहार ॥ ४ ॥
अंकुर भष सो मानुषा,
मांस भषे सो स्वान ।
जीउ बधे सो काल है,
वाको नर्क प्रमान ॥ ५ ॥

धर्म बड़ा उपकार है,
जीव दया चित राख।
जम फंदा सों बांचिहो,
वेद पुरान है साख ॥ ६ ॥
पाप बड़ा प्रत्यच्छ है,
हिंसा सम नहिं होए।
जिव हत्या ना छूटिहै,
कोटि पुरान सुन कोय ॥ ७ ॥

वार्त्ता।

देखो अपने मन में बिचार के किसी को जान मार के खा जाना यह बड़ा ज़ुल्म है कौन इनसाफ़ है आप सों करतब खड़ा करता है अपना किया आप सब कर्म भोगता है भला बुरा दोनों का फल भोगना होता है यह संसार करम रूपी है जैसा कर्म करता है तैसा फल प्राप्त होता है जो आप सो दुखका काम करता है आप दुखिया होता है

तब कहता है कि परमेश्वर हम को दुख दिया यह कहना महज़ ग़लत और खि़लाफ़ है क्योंकि अपना क़सूर देखता नहीं झूठ परमेश्वर को दोश देता है और अपने सिर पर गुनाह लेता है और दंड का काम करता है सुख कहां सो पावेगा सतगुरू के उपदेश को मानता नहीं और कुमारग को चला जाता है अगर ज्ञान करके देखो तो सब जीवों को दुख बराबर प्रतच्छ होता है देखो एक जीव को ईंट ले के मारो तो वह भी जान ले के भागता है क्या कुत्ता क्या बिल्ली क्या ख़स्सी क्या पच्छी आदिक को जब चोट लगता है तब वह भी चीत्कार मारता है और कंकि-आता है और बड़ा व्याकुल होता है और ऐसही अपने को भी तो चोट लगने सों दुख होता है ताते सब जीवो को दुख

बराबर प्रतच्छ होता है ताते सब जिवों को जानी अजान अपना भाई है बुरा काम कर के करतब किया हुआ अपना फल यह जीव आप कर्म भोग भोगता है कुकर्म कर के कर्म रूपी बंधन मों पड़ के कर्म बस होकर चौरासी लच्छ जोनि मों यह जीव भ्रमता फिरता है पशु पंछी आदिक देह धारन करके खग्गी पठरू मो जन्म लेकर बदला गला देता है औ जन्म जन्म दुख सहता है और पछताता है ताते कर्म रूपी बंधन सो फ़रक होजाना यही मुक्त है इसी को कल्यान पंथ कहते है अच्छे कर्म करके परमपद को प्राप्त होते हैं।

चौपाई—कोउ न काहु सुख दुख कर दाता
निज कृत कर्म भोग सुनु भ्राता ॥

दो० ज्ञान बीना नर बावरा,
अंधा मत का हीन।
सत्त बचन मान्यो नहीं,

जो सतगुर कह दीन ॥

वार्त्ता ।

यह मानुष का भाग उदै होता है तब सतसंग मो कहीं पर जाता है तब कथा पुरान सुन कर ज्ञान प्राप्त होता है तब सत असत को जानता है तब अपने मन मों विचार और बिबेक करता है किस को जीउ कहिए किस को ब्रह्म कहिये किस को माया कहिये किस को बिद्या माया कहिये किस को अबिद्या माया कहिये ।

यह सभ बस्तु जानने से अपना ज्ञान स्थित होता है ब्रह्म असी पद है ईश्वर तत पद है तूं पद जोव है जीव यह बुद बुदा है ईश्वर ढेहू है ब्रह्म समुद्र समान है तीनो दरजा एक रकम बुनिआद तीनो बस्तू मो पानो है जाते यह अज्ञान ही कर जीव कहलाता है ताते

ज्ञान कर के स्थिति होये तो ब्रह्म हैं जब ब्रह्मपद भी प्राप्त होता है तब यह जीव विज्ञान रूप होजाता है तब सभ इच्छा नाश हो जाती है तब अवागवन किस को होता है जब इच्छा कोई वस्तु की होती है तब जन्म मरन भी होता है जब अपने रूप मों प्राप्त हो गया तब जन्म मरन किस को होता है ॥ क्योंकि इच्छा तो रही नहीं आप शुद्ध रूप मों प्राप्त हो गया ताते ज्ञान करके आत्मा का विचार और विबेक करना मै कौन हों अपने को ऐसा काहे हुआ अपनी अज्ञानता को आप देखे तो कुकर्म आदिक न करें ज्ञान करके शुकर्म राहों पर चले और ब्रह्म का विचार करता रहै तब यह जीव भौचक्कर मों न पड़े और सुनो जिन को ज्ञान और बिबेक है सो नेक काम मों मन

को लगाते हैं और नाक़िस कामों में मनों आदिक को रोकते हैं बुरे वस्तु की तरफ़ जीयों को नहीं बढ़ाते हैं हर वक़्त सत वस्तु को बिचार करते हैं मीथ्या वस्तु का त्याग करते हैं आप शुद्ध रूप हो कर रहते हैं द्वैत दुर भाव किसी सों नहीं करते हैं और ज्ञान सभों को उपदेश करते हैं कुकर्म आदिक को छोड़ाते हैं काहे कि जिन को नेत्र प्रगाश है वे लोग अच्छे राहों पर चलते हैं और अन्धे लोग कुराह चलते हैं जब काँटा गड़ता है तब बहुत दुख खाते हैं और कलपते हैं और सिर धुन धुन पछताते हैं हाथ अपना मैंजते हैं सिर पटकते हैं तब क्या बनता है करतब का फल कर्म भोग भोगे बन-ता है बुरा काम का बुरा नतीजा होता है जैसा कर्म करता है तैसा फल पाता

है इसमें कुछ सन्देह की बात नहीं है सब महातमाओं ने यहि कही है येहि राह चलना सुगम है।

येही राह चलना बेहतर है और ठीक है और येही राह चलना परम पद को प्राप्त होता है।

कबीर बचन।

पूजा गुरु का कीजिये,
सब पूजा जेहि मांह।
उलटा सींचो मूल में,
साखा पत्र अघाय॥
मारन चाहिये क्रोध को,
जासो उठ उतपात।
क्रोध मार सीतल हुआ,
रहा न एको प्यास॥

खाना क्या गम।

ग़म समान भोजन नहीं,
जो कोइ ग़म को खाय।

अम्बरीष गम खाइयां,
दुरवासा बिललाय ।
पाप का मूल कौन लोभ,
लोभे जान गमाइयां ॥
पुन्य को खाया पाप,
कबीर साहेब का बचन है ।
याते रहो फराक,
जीव दया परआत्म पूजा ।
इ सम भक्ती और न दूजा ॥
देखिये वेद की रिचा है ।

श्लोक ।

ध्यानमूलं गुरु मूरतिः पूजामूलं गुरु पद
मंत्रमूलं गुरु वाक्यम मोच्छमूलं गुरु कृपा
गुर निरष परष के करना ॥ १ ॥
गूर कीजे निरख परष के, ग्यान रहस से पूरा । ग्रभ गुमान माया मद, त्यागे, दया छमा सत सूरा ॥ राह बतावें अमरलोक के, गावे सतगुर बानी।

गज मस्तक जस अंकुस बैठे, गुरकि ऐसो वानी॥ पाप पुन्य की शंका नाहि, करम भरम सो न्यारा। क्रत पाखंड सर्व पर-हरे, अस गुर करिये बिचारा ॥ १ ॥

अंकुरि जीव सुभाव।

जो जो जीव अंकुरी होई।
अल्प ग्यान गहि निरमल होई ॥
वैष्णव जन के निरमल कर्मा।
करम करत होये निष्कर्मा ॥
जाकी सुरत लगी है जहवां।
कहे कबीर सो पहुंचे तहवां ॥

दो० मन बच कर्म निहचे धरी,
जो सुमिरे सतनाम।
कहे कबीर सो दास को,
सदा होय बिस्राम ॥ १ ॥

बिस्राम पद पाने का यह सत राह है। कि औअल दया और दूसरा क्षमा तीसरा सीलता चौथा संतोष वृति

पांचवां समता राखे तब बिस्राम पद को पावेगा तब जन्म मरन सो छुट्टी पावेगा तब निसोग होगा तब विस्राम पावेगा तब बड़ा आनन्द होगा इसलिये सत्तगुर का उपदेश है कि तुम काम और क्रोध और लोभ और मोह और मद और अहंकार और अभिमान और परनिन्दा को त्याग करो।

जगत का जाल औ विडम्बना का बंधन को त्याग करो तब परमपद को पावोगे जब मन का बृत्ति और सकलो आशा को त्याग कर सतसंग करना और सब जीवों में मालिक का चमतकार एक सह देखना सभ आतमा पूरन है ताते कोई जीवों को इजा और तकलीफ़ नहीं देना हर वक़्त विचार और विवैक करना यह मन घोड़ा रूपी है चारो तरफ़ दौड़ता है आसमान और पाताल

एक करता है इस घोड़े का लगाम ग्यानरूपी बिचार है ग्यानरूपी लगाम हाथों में राखे तो मन स्थिर होय तब बिस्राम पद पावे ।

दो० मन का लहर अपार है,
    छनहिं करत उतपात ।
    ताको मारन चाहिये,
    ग्यान खडग लै हात ॥ १ ॥

वार्ता ।

और देखो यह जगत मों दो तरह के मनुष होते हैं एक मनुष मूरख का काम करते हैं हाड़ चाम लेहू मांस को खाते हैं यह मनुष का जन्म आप सो खोते हैं नर्क में जाने का काम करते हैं दूसरा मनुष वो है कि पोथी ग्रन्थ रामायण भी पढ़ते और कथा भी कहते हैं और ब्रह्म ग्यान भी कथते हैं परन्तु मांस मछली भी खाते हैं यह तो निरापढ़

पसू हैं इन को तो भारी दंड होगा क्योंकि वेद और पुरान सों खबरदार हो कर फिर हाड़ मांस को खाते हैं आप से नर्क में जाने का काम करते हैं अपने को चेत नहीं करते हैं सुख कहां से होगा ताते भोजन आदिक प्रसन्न वस्तु करना चाहिये। उजल कर्म से रहना चाहिये तब यह जीव उजल फल को प्राप्ति होगा और बिस्राम पद को प्राप्ति होगा और सुनो सन्त असन्त का लच्छण यह है संत वह है जो पांचो इन्द्रियां आदिक को शांति किया है और मनो आदिक को अपने हाथों में राखा है यह मन की सैना पांचों इन्द्रियां हैं कौन कौन काम क्रोध लोभ मोह अहंकार है यह पांचो इन्द्रियां बड़े बलवान और बलिष्ठ है इस को संत लोग त्याग करते हैं अपने पद पर रहते हैं सब जीवों को

दयादृष्टि से देखते हैं सब जीवों पर दया रखते हैं प्रेम भाव से बोलते हैं सीतल चित्त आनंद रूप सों रहते हैं।

सील सनेह संतोष समिता धारन करते हैं सुद्ध रूप होकर विराजते हैं तामस गोस्सा अहंकार नहिं करते हैं आनंद रूप सो रहते हैं यह संत का लच्छण है॥१॥ अब असंत का लच्छण सुनो॥ असन्त वह हैं जो काम क्रोध लोभ मोह अहंकार रखते हैं तामस भरा हुआ बचन बोलते हैं कपट का भेष धारण करते हैं अपने मन में हुमेव करते हैं और कहते हैं कि हम साधू हैं और सब लोगों को कहते हैं कि हम तुम को पुत्र बंस देंगे जो हम आशीर्वाद करेंगे सो होगा ऐसे मिथ्या बचन कह कर द्रव्य को हरण करते हैं और नष सिर जटा बढ़ाकर जगत मों फिरते हैं।

और लोगों को धिराते हैं कि हमारे श्राप सों तुम भस्म हो जावोगे ऐसा कहते हैं बड़े तामस सों यही असंत का लक्षण है इन्हहिं को असंत कहना चाहिये जो पांचो इन्द्रियों को बस नहीं किया तो असंत हैं ताते संगत करना संतों का ग्यानवान का सतसंग करना दयावन्त का बिबेकी का सतसंग करना धर्मात्मा का सतसंग करना मनुष्यों को उचित है इस से परमपद को प्राप्ति होता हैं ॥ १ ॥ और सुनो कामी क्रोधी लोभी जुआरी चोर बेईमान का संग नहीं करना विस्वास घातिक परनिन्दकी कपटी पर-द्रोही निशाखार अधर्मियों का संग न करना ठग बटवार जालिया जीवघातिक निरदई का संग नहीं करना ।

इन लोगों के संग करने से अपना ग्यान बुद्धि बिचार रहता नहीं वैसही

बुद्धि होता है काहे कि-जैसे संग बसे नर लोई। वैसे बुद्धि प्रापति होई॥ ताते इन लोगों का संग नहीं करना सतगुरु का उपदेश ख़्याल रखना होशियार रहना ग़ाफ़िल नहीं रहना हरवक्त होशियार रहना।

और सुनो संसारी अग्यानी लोग बड़े बुरे होते हैं अपनी तरफ़ खैंचते हैं आप तो कुमार्ग को जाते हैं परंतु दूसरे को भी कुमार्ग को ले जाते हैं ताते इन लोगों से फ़रक़ रहना अवश्य है इन लोगों से संगत नहीं करना जब संगत करना तो ग्यानी लोगों से संगत करना उचित है। ताते ज्ञान अपना बना रहे क्योंकि।

नीत क़िसान लोहा घन छुटे। नीत सतसंग माया मोह छुटे॥ सतसंग की महिमा महात्मा सभ मिलकर वर्णन किया है क्योंकि सतसंग करने से संसय का नास

हो जाता है जब ज्ञान अपना प्रकाश बना रहेगा तब भ्रम बुद्धि न होगी ॥१॥ और सुनो चार वृत्ति अंतस्करण का है मन बुद्धि चित्त अहंकार यह चार वृत्ति अंतःकरण का है और चार वृत्ति ज्ञान वैराग्य जोग विज्ञान यह भी चार वृत्ति है। और सुनो पांच इन्द्री ज्ञान की है प्रथम इंद्री कान दूसरी इंद्री आंख तीसरी इंद्री जिभ्या चौथी इंद्री नाक पांचवीं इंद्री त्वचा ५ यह पांचो इंद्री ज्ञान की हैं और सुनो पांच कर्म मनुष्य को नीत करना होता है प्रथम चौगान जाना— दुतिय मुखमंजन करना तृतीय स्नान पूजा चौथा भोजन आदिक पांचमें सैन करना यह पांचो कर्म क्रया है यह सब सुचि कर्म नीतः करना होता है और सुनो सुद्धि कर्म करने सो मन चित्त प्रसन्न होता है तब मालिक का भजन

भी बनता है ज्ञान प्रकाश होता है तब दया क्षमा सील संतोष समता होता है तब काम क्रोध का नास होता है तब लोभ मोह ईर्षा भी नहीं होता है तब यह सब कर्म आदि ज्ञानी लोग करते नहीं देखो ।

सोरठा । ज्ञानी करहिं बिचार,
भला बुरा सब वस्तु को ।
तजि कुपंथ आचार,
सत्त गहो निरमल भये ॥ १ ॥

दो० ज्ञानी करहिं अनेक क्रम,
विधवत जपु व्यवहार ।
लिपत न धूम अकास में,
वैसे जगत असार ॥

और देखो ।

यह देह मों राजा एक जीव है दूसरा यह मनरूपी डेरा दिया है यह मन जीव को अपने बस में रखना चाहता

है यह जीव को मन दुस्मन है अपने तरफ़ को खैंचता है यह जीव को मित्र गुर ग्यानरूपी साथ है ग्यानरूपी गुरु तो अपने तरफ़ खैंचते हैं गुरु परम दयाल है यह मन महा दुष्ट अपराधी है इस को बस करना चाहिये मन का सैना देखो कौन कौन है काम क्रोध लोभ मोह मान मद अहंकार यह सब सैना बड़ो प्रबल है इसको त्याग करना चाहिये ग्यान की सैना यह सब है सो सुनो औवल दया दूसरा छमा तीसरा सीलता चौथा संतोष पांचवां समिता छठा आनंद सातावां निरइच्छा यह सब बिर्ती देखो ग्यान की है जब ग्यान बना रहता है तब मन की बिर्ती नहीं जोर करती है।

यह जीव जिस तरफ़ जाता है वैस ही कर्म आदिक को करता है भला बुरा का

बिचार नहीं करता है बिचार करे तो अच्छे कर्मों आदिक पर चले तो बिस्राम पद को प्राप्त होय तब आनंद होय।

दो० राम मया सतगुरु दया,
साधु संग जब होय।
तब प्रानी जाने कछू,
रह्यो विषै रस भोय॥

और देखो।

मन मतंग मस्तान है,
चले मतंग समान।
ज्ञानरूप सिंघहिं निरखि,
सदा होय भय मान॥

देखो।

ज्ञान सों मन का नास हो जाता है ज्ञान प्रगास है यह मनुष्य का जन्म बड़े भाग से होता है सो ऐसा जमा नर का देह पा के चेत नहीं करता है सुख कहां सो होगा सुष कर्म करने को

मानुषका तन पाया है इस देहमें ज्ञान बुद्धि बिबेक भी होती है क्योंकि चेतन जामा यह है इस जामे मों परमेश्वर ने बहुत कुछ मनुष्य को अख़्तियार दिया है।

देखो ।

तुम तो अपने सो भी उद्दम रोज़गार कर के दो चार दस आदमियों को भी पालन कर सकते हो और पशु आदिक को भी पालन कर सकते हो पसु पक्षी को भी अपने अख़्त्यार मों रखते हो सभों से मनुष्य को अख़्त्यार परमेश्वर ने ज़ादा दिया है पशू आदिक को ऐसा अख़्त्यार परमेश्वर ने नहीं दिया है जैसा कि मनुष्य को दिया है।

देखो ।

पशु तो परबस में रहता है काहे कि खूटा मों बांध दियो है तो बांधा है

प्यास लगे तो प्यासा है अपने से इंदारे मों जल भर के तो पी नहीं सकता है। ताते मनुष्य के अख़्त्यार मों पशू आदिक हैं खाने को दें तो खायें पानी पीने को दें तो पानी पीयें नहीं तो भूखा प्यासा मर जाय पशू को कुछ भी अख़्त्यार नहीं है मनुष्य जामा मों बहुत अख़्त्यार दिया है इसलिये सत्तगुरु का उपदेस है कि तुम अच्छे कर्मों पर चलो तो तुम्हारी बेहतरी है मनुष्यका जामा फिर पावोगे पशु के जन्म नहीं पाओगे ताते अच्छा कर्म करना चाहिये।

और देखो।

सत्तगुरका बचन सुनके चेतना चाहिये सो चेत तो करता नहीं और बादाबिबाद करता है और कहता है कि मरे बाद क्या देखेंगे बड़े ताज्जुब की बात है देखो यहां हीं तो सब कर्म भोग भोगता है।

देखो।

अंधा लंगड़ा लूल्हा कोढ़ी हो कर भीष मांघता है कोई रहने नहीं देता है पराए दोआरे पर मारा फिरता है दाने को मुहताज हैं भर पेट खाने को भी नहीं मिलता है और देखो बसतर सो भी दुखी रहता जाड़े के ऐयाम मों रो कलप के बिहान करता है और कलपता है देखो सब कर्म भोग तो यहां हीं भोगता है आंख सों भी लोग देखते हैं तब भी चेत के नहीं चलते हैं लोक परलोक के सुख को नहीं देखते हैं और कुछ भी ख्याल नहीं करते हैं और देखो जो कुकर्म करने सों यह दंड लोग पाते हैं फिर भी वही कर्म लोग करते हैं फिर भी दंड पाते हैं और दुख भोगते हैं तब भी चेत नहीं करते हैं सुख कहां सों होगा सतगुरु तो बारबार चेताते

हैं तुम चेत के चलो जी बड़ा तोहरा बेहतरी होगा तुम को सुख प्राप्त होगा अच्छे कर्मों पर चलो तो आनंद बना रहेगा मालिक की कृपा और दया तुम पर सदा बनी रहेगी और परम पद को प्राप्त होंगे बड़ा आनंद होगा।

देखो।

सत्तगुरु जीवों का दुख देख के ऐसा उपदेस देखाते हैं कि जीवों का दुख दूर हो जाता है।

देखो।

सतगुरु परम दयाल परमार्थी हैं वैसे तो सन्त भी परम दयाल परमार्थी हैं सन्त कैसे होते हैं ॥ १ ॥

दो० अति कृपाल ना द्रोह चित,
सहन सीलता सार।
सम दम आदि अकाम मत,
मृदुल सर्व उपकार ॥ १ ॥

दो० अस्तुति निंदा मित्र रिपु,
सुख दुख ऊंच अरु नीच ।
ब्रह्मा टन अमृत गरल,
कंचन कांच न बीच ॥ २ ॥
सन्त ऐस ही होत हैं,
सम दृष्टि सम प्रीत ।
उन से प्रीत हि कीजिये,
छुटे जगत की रीत ॥ ३ ॥
बूड़े थे पै ऊबरे,
गुरु की लहर चमक्क ।
झांझरि देखी नावरी,
कूद के भए फरक्क ॥ ४ ॥

देखा ।

दो० जाको गुरु भौ आंधरो,
चेला काह करंत ।
अंधे अंधे डोलियां,
दोनों कुंआ परंत ॥ १ ॥
अब के गुरु जो बहुत हैं,

लूटपूट धन खाहिं ।
तार सके नहिं एक को,
बहुत को पकरी बांह ॥

देखो ।

दो० साधू वही सराहिये,
सहें घनों की चोट ।
कपट कुरंगी मानुषा,
परखत नीकसा खोंट ॥ १ ॥
साध बड़े परमारथी,
अपनो सीतल अंग ।
तपत जुड़ावें और को,
लावें अपनो रंग ॥ २ ॥

और देखो संत का लक्षण ।

वृक्ष फलै आप न चखे,
सरवर चखे न नीर ।
परमारथ के कारने,
सन्तन धरा सरीस ॥ ३ ॥
दो० वृक्ष फले नहिं आप को,

नंदी न अचवै नीर ।
पर स्वारथ के कारने,
संतन धरा सरीर ॥ ४ ॥
संत सदा सुख देत हैं,
रहत सदा सविवेक ।
तिन को पद बन्दन करो,
नासत बिघ्न अनेक ॥ ५ ॥
अब गुरुआ सस्ते भए,
कौड़ी अर्थ पचास ।
अपने तन की सुध नहीं,
सिष्य करन की आस ॥ ७ ॥

देखो बार्तिक ।

यह़ जगत मों गुरु हैं चार प्रकार के सो सुनो ।

चौ० एक गुरू हैं जिव के जोगी ।
दूसर गुरु हैं सब रस भोगी ॥
तीसर गुरु मकरी की चाल ।
उलटो मकरी पुनि चढ़ ताल ॥

चौथा गुरु हैं भृङ्गी भाई ।
निज रूपहि सम देत बनाई ॥
ऐसे गुरु पूरा हैं भाई ।
तिनको मन चित गहिए लाई ॥

प्रथम गुरु का यह मतलब है कि जिस में जीवों को मुक्ति हो जाय कर्म रूपी बंधन मों जीव न पड़े देखो गुरु परम दयाल परमारथी हैं और अज्ञानी जीवों को खोज खोज के ज्ञान उपदेस करते हैं और चेताते हैं और अच्छे राहों पर चढ़ाते हैं गुरु ऐसे दयावन्त हैं और दयालू हैं ।

देखो ।

दूसरा गुरु तो वह है कि चेले को अच्छे राहों परभी नहीं चढ़ाते हैं और अपने मतलब की बातें करते हैं चाहे चेला नर्क को जाय चाहे रसातल को जाय अपने को तो पूजा औ प्रतिष्ठा से

काम है अपने को तो धन आदिक लाभ होता है जिस से सब रस भोगते हैं देखो जीवों को सुखी नहीं किया यह तो जीवों को दुखी रक्खा ऐसे ऐसे गुरु सों क्या कल्यान होगा।

और देखो।

तीसरा गुरु वह है कि जो शब्द के तारों को लखा देते हैं ध्यान के सब अंग को बता देते हैं और शब्द का पारख भी लषा देते हैं जो सत्तशब्द आप सो आप नाद हो रहा है वह सत्त शब्द मों सुरत को नित जमावे तो सत्तशब्द मों सुरत प्रवेस करै तो सत्तशब्द अपना रूप प्रकाश देखला देता है और निज धाम को पहुंचा देता है कैसे कि जैसे—

दो० लोहा चुमुक प्रीत लगे,
देखत लिया उठाय।

ऐसा शब्द कबीर का,
जम सों लिया छोड़ाय ॥

और देखो ।

चौथा गुरु वह है कि जैसे कि भृङ्गी फलंगे को अपने अस्थान मों ले जा कर शब्द सुना कर अपना समान रूप बना कर उड़ा देता है ।

वैसे तो चौथा गुरु सत्तगुरु है जो जो जीव अज्ञान मूर्ख हैं उन को नित्त ज्ञान सिखाकर अपने समान बना देते हैं सुद्ध रूप बना देते हैं परम पद को पहुंचा देते हैं चौथा गुरु तो एही काम करते हैं निजधाम को पहुंचा देते हैं ।

और देखो ।

चार प्रकार की मुक्ति होती है सो देखो एक सायुज्य दूसरासा रूप तीसरा सामीप चौथा सा लोक यह चार प्रकार की मुक्ति होती है एक तो अच्छे लोकों

में जा के सुख आदिक भोग करना दूसरा समीप रहना परमेश्वर के नज़दीक सन्मुख रहना तीसरा अपना रूप परमेश्वर दे कर आप सामान्य कर देते हैं चौथा सायुज्य का मतलब यह है कि परमेश्वर में मिल कर एक हो गया और देखो नौधा भक्ति बर्णन करते हैं।

सतगुरु का बचन है सो सुनो।

प्रथम भक्ति सत्त शब्द में सुरत को लगाना और प्रबेस करना तब सतशब्द अपना प्रकास रूप देखावेगा तब सतशब्द के संग जाकर निज धाम को प्राप्त होगा इसको प्रथमभक्ति कहते हैं दूसरी भक्ति कथा प्रसंग है तोसरो भक्ति भजन जस गाना है चौथीभक्ति। सब जीवन सों रहे अधिना। पांचवीं भक्ति दया चित राखे। छठीं भक्ति सत्तबचन भाषे। सातवीं भक्ति सन्तोष चित राखे। आठवीं भक्ति। सब

जीवोंमें आतम देखे। नवीं भक्ति पर आतम पूजा। दसवीं भक्ति और नहिं दूजा।

जो आतम को पारख करो।
जीव जन्तु पर दाया धरो॥
तब भवसागर नाहीं परो।
सतगुरु वचन हृदय मों धरो॥
सुद्ध रूप हो स्थिर रहो।
उज्जल फलको तबहीं लहो॥

और देखो।

जिनको ज्ञानप्राप्त है उनलोगोंको भ्रम बुद्धि नहीं होती है ज्ञान प्रकास बना रहता है वह जीव निज धाम को प्राप्त होते हैं और आनंद मंगल करते हैं।

देखो।

मालिक को छबि चन्द्रमा के समान सीतल है सो छबि देख के सब सीतल होते हैं और सुनो इस दर्जे में प्राप्त लोग कैसे होते हैं।

देखो ।

साधु महात्मा का संग सोहबत क-रने सों अपने को ज्ञान बुद्धि होती है तब अच्छे कर्म धारण करते हैं जब मा-लिक के सन्मुख रहते हैं तब मुक्ति हो जाती है ।

और देखो ।

यह संसारी लोग माया मोह मों पड़ के दूसरे जीवों को सन्ता कर और दुखा कर अपने सरीर और परिवार को पालन पोषण करते हैं सो मनुष्य पीछे नर्क आदिक मों कलपते हैं इस लिये मनुष्य को चाहिए संसार का सुख और व्यवहार मिथ्या समझकर किसी को दु-खाना न चाहिये जहां तक बने तहां तक परमार्थ और उपकार करना चाहिये जाते बेहतरी होय ऐसा काम मनुष्य को करना चाहिये सब जीवों को मालिक

का अंस जानना चाहिये ताते जान के अपने मन मों बिचार और बिबेक करना चाहिये जासों मुक्ति पद को प्राप्त होना चाहिये ताते गर्भ अभिमान नहीं करना ग़ाफ़िल नहीं रहना इस जिन्दगी का भरोसा नहीं करना पल भर मों शरीर नास हो जाता है यह कच्चा तन का भरोसा करना न चाहिये न जानों यह शरीर किस घड़ी छूट जाय ताते मालिक के तरफ़ सुर्त को लगाना चाहिये और जस परमेश्वर का गाना चाहिये और कथा प्रसंग मों रहना चाहिये और नित सतसंग मों रहना चाहिये जाते ज्ञान अपना प्रकास बना रहे सतसंग मों जाने सो नित्त भंजन होता है यह तन तो चार दिना को रंग है आखिर मिलेगा तन ख़ाक मों आवेगा घुक्का लेजागा उड़ा के रहेगा न पता

उस बुनियाद का सब तो गये एही
हाल सों। रहा न सदा तन पाय सों ॥

और देखो।

दो० राम गये रावण गये,
गये कृष्ण औ कंस।
और गये सिसुपाल ह्व,
जरा सिंधु बलवन्त ॥

सो० अर्जुन गये जुझार,
गये युधिष्ठिर औ नकुल।
गए सहदेव अपार,
भीम करन दानी बड़े ॥

देखो।

दो० बालमीक नारद गये,
सहित व्यास सुकदेव।
जिनहिं पुरान बखानेऊ,
पाइ सकल जग भेव ॥

चौ० गोरष जोगी जोग जिन ठानी।
कीन्ह भरथरिहि आपन सानी ॥

सो सब बिन्से इहवां आये ।
रहा न कोई नर तन पाये ॥
कौरव दुर्योधन बलवन्त ।
ठान महाभारथ को अन्त ॥
जोगी जती तपी सन्यासी ।
बिनसे मुनि जन सहस अठासी ॥
दो॰ आया है सो जायगा,
राजा रंक फकीर ।
कोई सिंगासन चढ़ि गए,
कोइ पावन पड़ा जंजीर ॥

देखो ।

यह जग में आ के ऐसे महा बली और प्रतापी सो भी नर तन पा के न रहे यह तन का कुछ भरोसा न राखो पल में प्रलय हो जायगा ताते अपने को ज्ञान आदिक कर के सुकर्मों पर चलो तो तुम्हारी बेहतरी होगी और परम पद भी प्राप्त होगा ।

और देखो ।

यह जीव तो सदा स्वत: प्रकास है कोऊ यह जीव को उतपत न किया है आप सो आप अनादि प्रकास है सो आप को कुकर्म आदिक कर के माया जाल मों बंध के दुख भोगता है ।

और देखो ।

यह जीव तो सिंह के समान है और माया का जाल सियार के समान है तासो यह जीव आप को डरता है ।

काहे कि देखो आप सो मिटी को ला के पिण्ड को बनाता है और संदर लंगाता है. दूध ऊपर ढालता है और होमाद भी देता है और नाचता है और कूदता है और अपना हाथ जोड़के सिर नवाता है और ढोल बजा के पठरू का गला काटता है और उस पिण्डो से बरदान मांगता है और लोहू का टीका

लेता है देखो निरा बेवकूफ़ हो गया अपने को तो एक दम सों भूल गया अपने को कुछ भी ख्याल न किया कि मैं चेतन आत्मा हौं और यह सब ख्याल मेरा बना हुआ है काहे कि मैं झूठा पिण्डी मों क्यों माथा नवाता हूं देखो कि आप तो माया का जाल बढ़ा कर आप सों फंस जाता है कैसे कि—

दो० आप मकरिआ जाल रचि,
आपे फंस मर जात।
जैसे सुगना ललनि गहि,
आपे जात बंधात।
तैसे ही यह जीव निज,
भ्रम बस रहा भुलाय।
ताते सतसंगत करे,
सहज मुक्ति हो जाय॥

और देखो।

सतसंग मों जाने सों नाना तरह

का भ्रम लगा है सो नास हो जाता है।

देखो।

सिवाय सतसंग के कोई दूसरा उपाय नजर नहीं आता है सतसंग मों जाने सो इस का कल्यान होता है और उधार होता है।

और देखो।

यह संसार जगत तीन लोक नटबाजी बनाया है वह नट नारायण वंकार रूप थे सो आकार रूप धारण कर के पांच तत्व मिश्रित कर के मैं आत्मा संयुक्त मनुष्य को बना कर माया से श्रिष्टि रचा निरंकार सामी और माया अष्टंगी सम्मत कर के श्रिष्टि रचा ब्रम्हा रूप धारण कर के उतपात जगत को करते हैं बिष्णु रूप धारण कर के जगत का पालन करते हैं और शिवरूप धारण

कर के तीसरा नेत्र खोल के देखते हैं जो तीनों लोक नास हो जाता है जो पांच तत्व सो रचना हुआ है शरीर का चारि खान उत्पत्त किया है ।

देखो ।

मनुष्य और पसु आदिक और पच्छी जेते और बहुत ऐसे अस्थावर का रचना किया है पांच तत्व सो चारो खान का स्रिष्टि रचा है और पांच तत्व धरती मों भी है प्रतच्छ मालूम होता है ।

देखो ।

पसु पच्छी मों तत्व का घट बढ़ का विशेष है मनुष्य मों पांच तत्व पूरा है ताते मनुष्यको ज्ञान बुद्धि पूरण है इसी सो मनुष्य का जन्म उत्तम कहते हैं इस मों ज्ञान बुद्धि प्रवेस करता है ताते इस मनुष्य के शरीर मों चूका तो फिर पशु आदिक मों जा कर चौरासी मों वहां

उस देह मों ज्ञान का परिचै कहां सों पावेगा घास भूसा खाया करो मनुष्य के वराबर पसू कहा सो होगा ।

देखो ।

अबिनासी आत्मा कच्ची देह पाकर परिवार नास हो जाता है जब प्रलय सब होजाता है तब केवल आत्मा सत्त वर्तमान रह जाता है इसी सो फिर जगत उत्पत्ति होता है यह आत्मा कर्म करके फिर फस जाता है तातें पर बस हो जाता है अपने अज्ञानता सों आप बन्धेमान हो जाता है ।

देखो ।

ज्ञान करके परमपदको प्राप्त होता है।

और देखो ।

अज्ञानी जीव कुकर्म कर के कर्मरूपी बन्धन मों बन्ध जाते हैं जैसे कि सरकार बहादुर सब राजा वो सब रैअत को

अपने बस मों रक्खा है वैसाही तो नारायण ने माया का जाल पसार कर सब जीवों को अपने बस मों रक्खा है।

देखो।

माया के महाजाल मों फंसकर नाना तरह सों कलपता है और पल भर भी यह जीव को माया के जाल सों छुट्टी नहीं होती है सो अपने मन में विचार के ज्ञानी लोग देखो सतगुरु तो माया जाल सों फराक करते हैं ऐसे सतगुरु परम दयाल और क्रृपाल हैं।

देखो।

चौ० कर्ता दीन्हों ममता बेड़ी।
काट गुरु सो कीन्ह निबेड़ी॥
ऐसे गुरु को बन्दों पाऊं।
जासों जम का दंड न खाऊं॥

और देखो।

एक जगह पर कहा है।

दो० आग लगी है बिस्व में,
जलता है संसार ।
सत्तगुर शब्द उचार के,
जीव को लिया उवार ॥

और देखो ।

एक इतिहास सत्तगुरु ने कहा है माया और जीव के ऊपर दृष्टांत दिया है। देखो जीवों की अज्ञानता और बलिष्ट दोनों को दिखाया है सो सुनो एक समय मों सिंह का बच्चा जंगल सों निकल कर भेड़ी के झुंड मों आ पड़ा और रहने लगा कीछु काल रह गया तो सब सुभाव संगत मों रहनेसों भेड़ी का हो गया सिंह अपनी फुरती और अपनी चाल एक दम सों भूल गया और भेड़ोके साथ चरने लगा और खूंटा मों बंधने लगा ऐसा निर्बल हो गया भेड़ी के साथ होने सों निरा भेड़ी हो

गया तब एक समय मों एक सिंह उस भेड़ियों के नज़दीक मों आपहुंचा तब सब भेड़ी भाग चलीं उस ठट मों जो सिंह का बच्चा था सो वह भी सिंह को देखते भाग चला तब वह सिंह ने देखा कि यह सिंह हो कर क्यों भागा तब उस पर धावा कर के सिंह ने उसको पकड़ लिया तब सिंह का बच्चा डेराने लगा तब सिंह ने उस बच्चे को पानी के नज़दीक मों जा के कहा कि तूं अपना मुंह तो देख और हम को भर नज़र देख तब हम से डेराना जब सिंह के बच्चे ने अपने मुंह को पानी में देखा और उस बड़े सिंह का चेहरा भर नज़र देखा तो निर्भय हो गया।

देखो।

यही हाल जीव का है अपने को तो भूल गया डर के मारे भूत और प्रेतादिक

प्रेतादिक का पूजा करने लगा अपने बलिष्ट को एक दम से भूल गया जीव-हिंसा कुकर्म आदिक करने लगा निरा बेवकूफ़ हो गया जब गुरू के बचनों को माने तो गुरू उसके बलिष्ट देखला दें तो पट उस का खुल जाय तब कल्यान पद को प्राप्त होय ।

और देखो ।

सिवाय सत्तगुरु के भ्रम दूसरा कौन छुड़ाता है भ्रम के छोड़ाने हारे गुरु हैं ताते सत्तगुरु के बचनों को माने और सत्तगुरु सों नेह करे तो बेशक आवागवन सों छुट्टी होय । तब निज धाम को प्राप्ति पावे यह गुन तो सत्तगुरु मों है सत्तगुरु बिना जीव बूड़ता है बिचार सांसारिक लोग करते नहीं दुख खाते हैं तब भी चेत करते नहीं अहंकार और मद मों मस्त रहैं जब आवेगा काल

लेगा टपाक दे। तब तो रहोगे पछता के। चतुर चेत नर भ्रम को त्याग कर सत गुरु के सरन लग पैहो निज धाम को। बड़ो तो आनंद होत सतगुरु जी के धाम मों।

और देखो।

एक इतिहास है सो सुनो एक समय मों दो कुत्ता कासी करवट लेने को चला सो कासी नगर मों पहुंचा तब आपस मों सलाह किया कि हम चलते हैं बज़ार मों कुछ खाने को उस बाज़ार मों दो भाई की दूकान हलवाई की थी एक भाई ने मावा बना कर रक्खा था हल-वाई अपने भीतर मों भोजन करता था देखो कुत्ता दूकान पर चढ़ कर मावा खाने लगा उस हलवाई की स्त्री ने मांवा खाते कुत्ता को देखा तब अपने पुरुष से कहा कि मावा को कुत्ता खा रहा है

तब हलवाई ने कहा कि और थोड़ी चीनी मावे पर कुत्ते को दे दो इच्छा भर के खाने दो तब हलवाइन ने मावा पर चीनी दे दिया कुत्ता ने सन्तुष्ट हो के भोजन किया और आनंदसों चला आया तब दूसरे कुत्ते ने पूछा कि कहो भाई जी क्या भोजन भया तब उस ने उत्तर दिया कि भाईजी एक हलवाई ने तुरत मावा बनाकर डगरने पर रक्खा था हम चढ़कर खाने लगे जब हलवाइन ने हम को खाते देखा तब अपने पुरुषसे कहा कि कुत्ता मावा खारहा है तब हलवाई ने कहा कि उस पर थोड़ी चीनी दे दो कि जिस में वह इच्छा भर खाय सो भाईजी हम इच्छा भर के भोजन किया और हम तृप्त हो गये तब दूसरे कुत्ता ने कहा कि भाई जी अब तुम रहो हम खाने को जाते हैं तब यह कुत्ता भी

उस हलवाई के भाई के दूकान पर चढ़ कर मावा खाने लगा हलवाई भीतर में भोजन करता था जब हलवाइन ने कुत्ते को मावा खाते देखा तब अपने पुरुष से कहा कि मावा कुत्ता खा रहा है तब हलवाई खोर्नी ले कर दौड़ा उस कुत्ते को घेर के मारे खोर्नी सो सारे देह फोड़ दिया जब जरा सी फ़ुरसत मिली तब कुत्ता जान ले कर भागा और कुत्ते के पास आ कर तब सब वृत्तान्त अपना कहा कि भाई जी हम को तो मारे खोर्नें सो सारा देह फोड़ दिया नहीं भागते तो जान सो मार देता हम जान ले के भागे तब हमारी जान बची तब दोनों कुत्ता ने आपस मों सल्लाह किया कि कासी करवट दे कर इसी हलवाई का बेटा हो कर बदला लेव तब आपस मों एही सम्मत पसन्द भया ।

देखो ।

मावा चीनी खाया था सो उस के हुहां जन्म लिया जो चीनी खिलाया था उस हलवाई को बेटा होने का बड़ा आनंद और उत्सव भया और दूसरा कुत्ता भी जन्म लिया उस हलवाई के हुहां जो मार खोनां सो फोड़ दिया था उस को भी बेटा होने का बड़ा खुसी और मंगल भया ।

और देखो ।

चीनी मावा जो खाया था सो लड़का पिता और माता का बड़ा आज्ञाकारी हुआ माता पिता के टहल में हाजिर रहा ।

देखो ।

दूसरा लड़का उस हलवाई का जो मार खोनां सो सारे देह फोड़ दिया था वह लड़का बाप और माय को मार

पीट करने लगा और बड़ा दुख देने लगा और माय बाप को खाने को भी नहीं देने लगा और मार खोनें सो बाप का सारे देह फोड़ दिया और बड़ा दुख दिया।

देखो।

उस जन्म का बदला सब चुका लिया।

देखो।

इसी तरह से एक जन्म का दूसरे जन्म में बैर और बदला लेता है बेटा होकर के चाहे भाई होके चाहे पोता होके बदला दुख सुख देता है ताते सत्त गुरु का उपदेश यही है कि किसी को दुखाना नहीं चाहिये बिचार और बिबेक सो काम करना चाहिये कि जिसमों आइन्दे पर दुख भोगना नहीं पड़े इसो सो ज्ञानी लोग किसी को दुखाते नहीं बिबेक और बिचार सो काम करते हैं बिचार के साथ

चलते हैं सोतल चित्त आनंद सो रहते हैं सब जीओं पर दया भाव रखते हैं औ प्रेम भाव सो बोलते हैं और सभों को ज्ञान उपदेश करते हैं काहे कि जिस मों जीव सुखी होय ।

देखो ।

सन्त लोग पराए का सुख देख के बड़े आनंद होते हैं अपने को बड़ा सुख मानते हैं पराए का दुख देख नहीं सकते हैं दुख छोड़ाने का उपाय करते हैं जिस में जीव सुखो होय ।

देखो ।

सन्त और ज्ञानी के यही स्वभाव हैं ये लोग बड़े दयालु और दयावन्त होते हैं सन्त और ज्ञानी का चित्त बड़ा कोमल होता है नेनू के समान होता है इन लोगों को कठोरता नहीं होतो सदा चित्त कोमल रहता है ।

और देखो ।

सन्त औ ज्ञानी लोग अपना स्वारथ चाहते नहीं जिस में पराए की बेहतरी होय सन्त और ज्ञानी लोग तो एही चाहते हैं ।

तोमर छन्द ।

सत्तगुरु सरनाई सब फल पाई
मत बुध सुंदर सब करतं ।
अच्छै वर्दानो सब सुख खानी
दुख दरिद्र सब भ्रम हरतं ॥
भौसागर तारन कष्ट निवारन
अभिमत अबिगत सोभितं ।
ज्ञान निधाना सब गुन धामा
अमृत रस मत को गहितं ॥
जय जय सामी अन्तरजामी
सब बिधि पूरन सब गुनियं ।
खोजत खोजत अन्त न पाये
सुर नर सिद्ध और मुनियं ॥

जोगी जती सती सब हारे
हरि हर ब्रह्मा कब कहियं ।
भक्त बछल प्रभु लीला धारी
अधम अधीन जग सो गहियं ॥
बड़बड़ पापी मान तथापी
गहु सरनागत सो लहियं ।
नाम निरंतर सभ के जनतर
दूत भूत जम दुर करनं ॥
जादू सेहर ओझा डाइन
सुनत नाम सभ दुख हरनं ।
वोहं सोहं सोहं गाइ
डाड़ा धुनि नित मन धरनं ॥
जो गुरु भेद लखावें छन मों
दुख दुर्मत ना जीव भ्रमनं ।
बिना कष्ट न्हि पावे भेदा
बिन सतगुरु न्हि बुध लहियं ॥
दो० सत्तगुरु सदा दयाल हैं,
जन पर रहत सहाय ।

नाना कष्ट नेवार के,
जन को लेत बचाय ॥

और सुनो छन्द में ।

सत्तगुरु चरन सरन पद पंकज
मन बच कर्म सदा गहियं ॥
जो जो भक्त भये यह जग मों
सो सब तर गये गुरु सरनं ॥
पीपा सिवि प्रह्लाद करन
सहदेव विदुर गयो हरि सरनं ॥
हरीचंद केवल कुम्हार
माधो तमोल पलटू धुनियं ॥
बिप्र अजामिल गनिका कुबजी ।
यह सब जिव को भक्ती उपजी ॥
नाम प्रताप परम पद पाई ।
यह सब चल गयो संख बजाई ॥
देख भक्ति की महिमा भाई ।
सब तज गहु सत गुरु सरनाई ॥
जासो सब बिधि होत भलाई ।
तब यह जीव परम पद पाई ॥

देखो ।

तजहु कुपन्थ सुपथ गहु भाई ।
कर्म भर्म सब देहु बहाई ॥
सत गुरु सरन गहो चित लाई ।
तब यह हंसा. निज पद पाई ॥
जो कोइ जप सतगुरु का नाम ।
सो पावे अवस्य निज धाम ॥

वार्ता और देखो ।

जो कोई सच्चे मन सों निह कपट होकर सतगुरु सो नेह और प्रीत करते हैं और उज्जल कर्म सों रहते हैं और सतगुरु के वचन पर जो कोई चलते हैं और गुरु की आज्ञा पालन करते हैं ।

देखो ।

सतगुरु जी उन का सब बिधि पूरन काम करते हैं और सब तरह सों अपने जन की रच्छा करते हैं जन पर सहायता रखते हैं सतगुरु सदा दयाल हैं ।

जीवों का अवलम्ब सत्तगुरु है और सतगुरु जीवो को उबार भौसागर सो करते हैं और फिर वह जीव भौसागर मों नहि आता परम पद को जाता है औ बिस्राम पद पाता है सतगुरु जी की कृपा सो आनंद फल की प्राप्ति होती है।

ताते।

सतगुरु सरन गहो हो भाई।
जाते सब बिधि होत भलाई॥
सतगुरु नाम गहो हो भाई।
जाते आवागवन नसाई॥
गुरुप्रसाद निहचल पदपाई॥
तब यह जीव मुक्ति हो जाई।

और देखो।

जैसे कि सूर्य्य औ सूर्य्यमुखी पत्थर सों प्रीत है कि देखो सूर्य्यमुखी पत्थर को सुर्य्य के सामने राखो तो अग्नि प्रकास हो जाता है वैसे गुरु सों औ मालिक सों भी प्रीत है वैसे गुरु सों प्रीत करने

सें मालिक की कृपा तुमपर होगी और गुरू जी की कृपा सें परम पद को प्राप्त होगे और बिस्राम पद को प्राप्त होगे तब आनंद मंगल होगा सतगुरू जी का बचन है ताते सतगुरू जी सों नेह वो प्रीत करना उन की सेवा औ भक्ती करना जिस मों यह जीव की बेहतरी होय ऐसा काम करना।

और देखो।

व्याह सादी जगों के बिषै मों खुशी मंगल आनंद बड़ा होता है और बड़े नियम से सब आदमी काजौलोग रहते हैं और कहते हैं कि मेरे बेटा बेटी का व्याह है।

देखो।

तहां पर आठ आठ पठरू का गला काटते हैं और मार कर उस के हड्डी और मांस को हांड़ी मों. सिझाते हैं और सब मिल के खाते हैं।

देखो ।

सब नियम उन की तो छप्पर पर गई चंडाल का कर्म हो गया अशराफियत सब जाती ही ।

देखो ।

जन्म व्याह शादीमों खुशी मंगल करना चाहिये तहां पर हिंसा हत्या करना यह कैसी बात है यह तो जन्म मों बिघ्न होता है कुसल कहां सो होगा आप सो दुख का काम करता है सुख कहां सो होगा जिस जन्म मों जीव का घात होगा वह जन्म सुद्ध कहां सो होगा ।

और देखो ।

यह मनुष्य मों चार बरन होते हैं तिस मों मुख्य ब्राम्हण हैं सभों मों सिरोमणि होते हैं चारो जुग मों जगत गुरु ब्राम्हण हैं और मुष्य हैं प्रथम उप-

देसी ब्राम्हण हैं सो उनको देखो एक टका पैसा लेकर पठरू को संकल्प कराते हैं और आज्ञा देते है कि बल दान देवता को दो सामने मों जाके ऐसा उपदेस करते है बड़ ताजुब की बात है जो ब्राम्हन को चाहिये आत्मा का बिचार औ बिबेक करना चित्त मों दया क्षमा रखना उज्जल कर्म सों रहना सो तो ब्राम्हण देखो ऐसे निर्दयी हो गये ।

दया तो जरी सी चित्त मों रही नहीं बेसक पठरू को संकल्प कराते हैं कलयुग के ब्राम्हण लोग तो और क्या के हीन हो गये देखो इस कलयुग मों कोई २ ब्राम्हण क्या और कर्म सों सुद्ध रहते हैं।

देखो।

जिन को बिद्या का प्रबेस है गीता और भागवत को जो अच्छी तरह सो देखा है

सो सुनो भगवान जी का वचन है कि जीवो पर दया रखना जीव घात नहि करना ॥

जीव दया परमो धरमः
जीव हिंसा न कर्तव्यम ॥

देखो सर्व मो एक आत्मा है हिंसा आदि न करना देखो ब्राम्हणों का लक्षण श्रीकृष्ण जो गीता मों अछी तरह सो कहा है।

देखो।

ऐसा भी कहा है।

श्लोक।

ब्रम्ह चिन्ह ते ब्राम्ह न
सम दृष्टी सो पंडितः।

ऐसा श्री कृष्णचंद जी ने कहा है। ब्राम्हणों के चित्त मों दया चाहिये और उज्जल काया सों रहना चाहिये सो तो करते नहीं और एक टका पैसा के लोभ

पर पठरू घर घर संकल्प कराते हैं औ पठरू का मूड़ भी आप सो मांग लेते हैं जजमान देता है तब उस मुंडी को कान पकड़ के लटकाये हुए हांथ मे घर को आते हैं और बड़ आनंद सो ब्राम्हणी को हाथ मां देतें हैं और कहते हैं कि आज तो एक मूड़ हाथ लगा है खूब अच्छी तरह से बनाओ जिस मां अच्छा बने देखो तो खस्सी की तो जान गई औ खानेवाले को ज़रा स्वाद कम न होये यह तो बड़ जुल्म की बात है आप तो रसातल नर्क को गये परन्तु ऐसा उपदेस किया कि जजमानों को भी रसातल नर्क को ले गये ऐसे उपदेसी तो हिंसकी ब्राम्हण लोग इस कलयुग के होते हैं ।

और देखो ।

जो ब्राम्हण दयावन्त विद्यावान हैं

उन लोग दया धर्म उपदेस करते हैं और अच्छी राह को बतलाते हैं ।

देखो ।

आप भी परम पद को प्राप्त होते हैं और दूसरे को भी परम पद को प्राप्त करते है ।

देखो ।

वह ब्राह्मण नारायणके तुल्य हैं ऐसे ब्राम्हण को बारबार नमस्कार करना चाहिये और सुनो जो किसीने अविच्य कर्म किया था पूर्वजन्म मों वह लोग दंड यहां पर पाते हैं और दुख भोगते हैं और पछताते हैं और कलपते हैं और कहते हैं कि कौन कसुर उस जन्म मों किया था सो यह दंड पाते हैं और दुख भोगते हैं ।

देखो ।

तब भी लोग चेतके काम नहीं करते हैं ।

देखो ।

जो कर्म करने सें यहां पर दुख भोग ते हैं और बड़ा दुख खाते हैं

देखो ।

फिर भी लोग यहां पर वही काम करतें हैं कि जिस से कारन नास होता नहीं और कारन रोज़बरोज़ बढ़ा जाता है।

देखो ।

जब रोगी कर्म के साथ रहेगा और औषध को खायगा तब कारन औ रोग नाश होगा तब कारणि आराम पावेगा ।

सो देखो ।

जब लोग आराम पाया तब फिर भी भूत प्रेत का पुजा करने लगे और चार चार पठरू का गला काटने लगे और कहते हैं की आज देवता को पठरू देते हैं बड़ ताज्जुब की बात है जो कर्म कर के ऐसा दुख भोगा है सो फिर भी वही

दुख भोगने का लोगों का मन करने लगा जासो फिर दुख भोगना पड़ा।

देखो।

ये लोग महा मूर्ख हैं जब यह लोग कहीं पर सतसंग मो जायं तो सतगुरु जी के बचन और उपदेस को सुनें तो ज्ञान प्रवेस करें तो बेसक कुकर्म आदिक को लोग त्याग करें और अच्छे कर्मों पर चलें तो लोगों की बेहतरी होय।

और देखो।

जो राहों में कांटा गड़े तो वह राह लोगों को कभी जाना नहीं चाहिये दुख आदिक को ख्याल करै तो वह राह चलना न चाहिये।

देखो।

सन्त और ज्ञानीलोग पहिले विचार करते हैं तासों सदा सुखी आनंद बने रहते हैं।

और देखो ।

सन्त और ज्ञानी का एक रंग सुभाव होता है ।

ज्ञानी औ सन्त अच्छे कर्मों की धारणा करते हैं और आइन्दे के दुख को ख्याल करते हैं ।

कुकर्म करने सो आइन्दे को बड़ा दुख होता है औ कर्म भोग भोगना पड़ता है ताते सतगुरु का उपदेस है कि चेत के चलो जीना तुम्हारा बेहतरी होगा और परम पद को प्राप्त होगे सो देखो सतगुरु का बचन यह है जहाज पर चढ़ो अच्छे कर्मोंको धारणा करो यह भवसागर पार उतर जाओगे ।

और देखो ।

चंद तरह के क़सूर लोगों से होते हैं और चंद तरह के क़सूर लोग करते हैं एक जान के ज्यादती औ बेइमानी

लोग करते हैं अपने ज़ोम और मद मों ज्यादती लोग करते हैं।

देखो।

ज़रा नहीं परमेश्वर के डर से डरते हैं मारे ज़ोम के अपने मद मों जीव-हिंसा लोग करते हैं।

देखो।

वही लोग कर्म भोग दुख आदिक को भोगते हैं औ कलपते हैं खाने की तकलीफ़ कपड़े की तकलीफ़ औ रहने की तकलीफ़ होती है।

देखो।

पराए दर्वाज़े पर मारे फिरते हैं तब भी कोई रहने नहीं देता है।

देखो

अपना कर्म किया हुआ हिंसा हत्या ज़ुल्म ज्यादती का फल लोग भोगते हैं।

और देखो।

जो कोई रास्ते में चला जाता है

अनुचित सो खोटा पिपरी पर लात पड़ता है अलासक सो।

देखो जान के तो नहीं मारा उसका दंड कैसे होगा।

देखो।

जान के तो मारा नहीं अलासक सो कसूर होगया तो बेशक कसूर परमेश्वर माफ़ करेंगे परमेश्वर तो इनसाफ़ करते हैं बेकसूर औ बेगुनाह के किसी को दंड तो देते नहीं जब कोई अधर्म करता है चोरी बदमांसी दगा फ़रेब औ किसी को झूठी गवाही देकर के कतल करादेना और कैद करा देना वो झूठा हलफ़ को उठा लेना औ किसी का माल मारलेना औ किसी को विस्वास दे कर विस्वास घात करना औ किसी के स्त्री को कुछ तमा दे के हरन करना और किसी के घर मो डांका देना औ शस्त्र सों मारना औ लोगों को घायल करना।

देखो ।

एही कर्म अपना किया खड़ा होता है तब यह सब कर्मों का फल भोगना होता है तब नाना तरह का दुख भोगना पड़ता है ।

देखो ।

करमों का फल प्रत्यक्ष भोगना पड़ता है जैसा कर्म जो कोई करता है तैसा फल को प्राप्त होता है इस मो कुछ सन्देह की बात नहीं है

और देखो ।

जैसा कर्म करोगे तैसा सुगंध और दुरगन्ध उड़ेगा

देखो ।

अच्छे कर्मों का अच्छा सुगंध उड़ेगा बुरे कर्मो का वेशक दुरगंध उड़ेगा दोनों कर्म अटल बटल है इस मो घट बढ़ कोई नहीं है दोनो कर्म बराबर तुल्य हैं

न रतीभर कोई बढ़ है न रती भर कोई घट है।

देखो।

एके जगह सोने का औ बदि का उपजा होता है अच्छा कर्म भी वो बुरा कर्म भी देखो इस को सन्त लोग औ ज्ञानी लोग पहचान करते हैं।
बुरे२ कर्म को बिलग करते हैं बुरे बस्तु को त्याग करते हैं।

देखो।

जैसे कि हंस नीर और चीर को विलग करके चीर को पीता है और नीर को त्यागता है।

देखो।

वैसे तो सन्त औ ज्ञानी लोग अच्छे कर्म को धारण करते हैं कुकर्म आदिक को त्याग करते हैं बुरे कर्मों के नज़दीक नहीं जाते हैं अच्छे कर्मों पर चलते हैं औ रहते हैं।

देखो ।

तब महात्मा गिना ते हैं जब अच्छे कर्मों को धारन किया है ।

देखो ।

दूसरे लोगों को भी सन्त औरग्यानी लोग चेताते हैं और सतगुरू के बचन को सुनाते हैं ।
और लोगों को अच्छे राहों पर चलाते हैं और कुकर्म आदि को छोड़ाते हैं और बगुला सो हंस का रूप बनाते हैं ।

और देखो ।

सन्त और ग्यानी तो अपने समान बना लेते हैं और दया दृष्टि से जीवों को देखते हैं और शुद्ध रूप होकर रहते हैं और आनन्द रूप सों बिराजते हैं औ गुरू के ध्यान मों रहते हैं औ मालिक का नाम लेते हैं और दयाल रूप सों रहते हैं ।

देखो ।

जो कोई सतगुरु के बचन को मानते हैं तो उन को सतगुरु अपने समान बना लेते हैं ।

देखो ।

जैसे कि भृङ्गी फनगा को ले जा कर अपने स्थान में शब्द अपना सुना कर अपना रूप बना देता है ।

देखो ।

सतगुरु भी तो ज्ञान उपदेस कर के अपने समान बना लेते हैं ।

देखो ।

सतगुरु के समान दयाल औ दयावन्त को है ताते सतगुरु का सरन गहो तो परम पद को प्राप्त होवोगे आनंद मंगल बड़ा करोगे आवागवन सो बचोगे तब बिस्राम पद को पावोगे ।

और देखो ।

यह संसार का सुख कैसा है कि जिस तरह सो बादल को छांह है

देखो ।

छांह सदा रहती नहीं तुरत छांह होती है औ तुरत धूप हो जाती है सदा छाह तो रहती नहीं ।

चौ० सुत वित नारि त्रिविध सुख कैसे ।
उपजहिं घटा जाहिं नभ जैसे ॥
सुत वित नारि भवन परिवारा ।
होहिं जाहिं जग बारम्बारा ॥

रामायण मो भी गोसाइं जी कहा है संसार का सुख सदा अस्थिर रहता नहीं तिस मो संसारी लोग माया और मोह मी पच कर पर लोक को तो ख्याल करतें नहीं एक दम सो माया और मद औ मोह औ अहंकार मों डूब गये देखो परमेश्वर का भजन तो कभी करते नहीं और नहीं अच्छे कर्मों पर चलते हैं और नहीं कभी कुछ भूखे नंगे को देते हैं औ नहीं किसी को मृ बचन कहते हैं औ प्रेम भाव सो बोलते नहीं ।

देखो।

बेटा बेटी के शादियों मों आठ २ पठरुओं का गलाकाटते हैं औ जीव घात करते हैं।

देखो।

बड़े ताजुब की बात है कहां तो ब्याह शादी और खुशी मंगल।

देखो।

तहाँ पर लोग जीव घात करतें हैं और कर रहें हैं।

कहां मंगल आनंद औ तहां पर लोग हत्या हिन्सा करते हैं।

देखो।

सुभ कर्म को छोड़ के लोग असुभ कर्म करते हैं।

देखो।

अच्छा कर्म का फल कहां सो होगा।

देखो।

कर्म तो बुरे २ किया हिन्सा हत्या जीवघात सुख कहां सो होगा।

देखो।

बुरे कर्म का बुरे २ फल भोगना पड़ेगा औ बड़ा दुख होगा।

देखो।

रो २ के दुख भोगना पड़ेगा।

देखो।

वह दुख का हाल तो वही जाने जिस को कर्म भोग भोगना पड़ेगा दूसरा उस के दुख का हाल क्या कह सकेगा।

देखो।

वही जाने जिस को दुख भोगना होता है और बड़ा दुख खाता है।

देखो।

वही आदमी तन दुखी और मन दुखी और जन दुखी औ पुत्र दुखी और गृही दुखी और स्त्री दुखी और परिवार दुखी और मित्र दुखी होते हैं और धन दुखी और अन्न दुखी औ बस्त्र दुखी भुषन दुखी और रोजी दुखी और रोज़गार के दुखी होते हैं।

देखो ।

वही आदमी अज्ञानी लोग जब बिमार पड़ते हैं कर्तबों के फल सो कर्म भोग भोगते हैं चेत नहीं करते हैं और चरु मो अदहन करके लोग जीते कबूतर को ना देते हैं और उपर ढकनो झांप के आंच लगाते हैं और उस कबूतर को खूब अच्छी तरह सो रसे रसे सिझाते हैं और देखो उस में कबूतर मैला भी कर देता है तिस को लोग सब मिल करके पी लेते हैं ।

औ उस मैले का लोग जरा ख्याल नहीं करते हैं ।

देखो ।

आप सो लोग नर्क को पीते हैं विचार औ बिबेक मूर्ख लोग नहीं करते हैं आप सो नरक भोगनेका काम करते हैं आंख सों देख के उस नर्क को पीते हैं

औ ख़ुशी होते हैं निरा बेवकूफ़ गदहा हो गए देखो तो आदमीका जन्म ऐसा पा के चैतन्य जामा तिस मों पशू का काम करते हैं अपने को ज्ञान आदिक बिचार करते नहीं ।

देखो यही लोग अंधा औ लंगड़ा औ लूल्हा होकर मारे फिरते हैं और येही लोग कोढ़ी निसवांगी और लोथ और अरधं की बीमारी पड़ कर दुख भोगते हैं औ कलपते हैं जन्म भर देखो और भर पेट खाने को भी अच्छी तरह सो मिलता नहीं कलटकलटके प्राण जाता है सब वस्तु से बिमुख रह जाते हैं तुष्ट कहा सो होंगे ।

देखो ।

कर्म तो खोटाखोटा किया सुख कहां सो होगा ।

जैसा कर्म लोग करते हैं तैसे फल को प्राप्त होते हैं ।

देखो ।

सतगुरु के बचन को तो मानते नहीं औ कुमार्ग को चले जाते हैं ।

देखो ।

रामायण में गोसाईं जी भी कहा है।
चौ० कर्म प्रधान विस्व करि राखा ।
जो जस करै सो तस फल चाखा ॥

सब ग्रन्थकार भी तो सुभ कर्म करने को कहा है और उज्जल कर्म सों रहने को कहा है दया औ परमेश्वर का भजन भी करने को कहा है औ सतसंग आदिक भी करने को कहा है औ अच्छे कर्मों पर चलने को कहा है औ बुरे कर्मों को त्याग करने को कहा है ।

और देखो ।

अपने करतवों से लोग नर्क और स्वर्ग को जाते हैं औ सुख दुख को भी लोग भोगते हैं ।

देखो।

ज्ञानी लोग तो बिचारके साथ चलते हैं औ रहते हैं।

सन्त औ ज्ञानी लोग परमेश्वर के जस को गाते हैं और भजन करते हैं और लोगों को भी चेताते हैं और अच्छी तरह सो ज्ञान दिखलाते हैं अच्छे राहों को बतलाते हैं औ कुकर्म आदिक को छोड़ाते हैं और जीव जन्तू पर दया करनेको कहते हैं औ साधसन्त की सेवा औ सतसंग करने को कहते हैं और पर उपकार करने को कहते हैं

सन्त औ ज्ञानी लोग तो पराए की बेहतरी चाहते हैं।

देखो

सन्त लोग और ज्ञानी लोग तो परमार्थी काम करते हैं सन्त औ ज्ञानी का चित्त कोमल होता है सीतल चित्त

आनंद रूप सो रहते हैं और सुद्ध रूप हो कर बिचरते हैं।

देखो।

संसारी लोग सन्त औ महात्मा के बचन पर भी नहीं चलते हैं अगर सन्तों के बचने पर चलें तो सभों की बेहतरी होय।

संसारी लोग कहते हैं कि आज जग्य है व्याह शादी मों कुलदेवता की पूजा होती है।

देखो बिचार कर के कुल देवता तो श्री भगवान जी सभों के होते हैं सो देखो तिन की तो खूब लड्डू पेड़ा बरफी पकवान मालपुआ सो पूजा खूब करना चाहिये।

सब पूजा का मूल तो एही पूजा है इस के बराबर तो कोई पूजा होती नहीं जड़ पूजा तो यही है इस पूजा सों सब की बेहतरी होती है।

संसारी लोग अज्ञानी मूर्ख तो घर मों पिण्डा औ पिण्डी के भीर मों जा के खस्सी औ पठरू का गला काटते हैं।

घर के सब आदमी मिल कर मै परिवार सब मिल कर खाते हैं।

और उस पठरू के मांस को टोले परोस मों बांटते हैं और बड़ी तारीफ़ कर के खाते हैं औ बड़े आनन्द खुशी होते हैं।

देखो।

जिस रोज़ खस्सी औ पठरू को मारते हैं उसी घड़ी उन पर हत्या औ पाप लगा।

देखो।

यह पाप भोगना पड़ेगा औ बदला गला अपना देना पड़ेगा ज़रूर ज़रूर के बदला गला देना पड़ेगा।

किसी को जान मार के खा जाना क्या सहज बात है।

देखो ।

मूर्ख लोग अपने कुकर्म कर के यह मनुष्य का देह आप सों खोते हैं पशु आदि का देह आप सो लेते हैं ।

देखो ।

यह मनुष का देह बड़ा भाग सो होता है लोग बड़ा तपस्या करते हैं तब मनुष का जनम पाते हैं ।

देखो ।

ऐसा मनुष्य के जन्म को लोग अग्यानी मूर्ख बातों में खोते हैं फिर यह जामा सो मुलाक़ात कहां सो होगी ।

देखो ।

परलोकको तो लोगोने ख़्याल किया नहीं संसारी सुख मों लोग मान औ बड़ाई औ जीभ्या स्वाद के वासते आप सों पर लोक को खो दिया औ रसातल जाने का काम किया औ परोहित जी

भी एक टका पैसा लेके पठरू को संकल्प कराया तो यह भी रसातल जावे का काम किया।

आप भी गये औ जजमान को भी ले गये ऐसा उपदेस किया कि लोगों को चौरासी लच्छ जोनि मों बहा दिया औ जीव घात करा के आप भी बहगये।

देखो।

यह जगत मो मुष्य उपदेसी तो ब्राम्हण हैं।

क्योंकि देखो

जो राह ब्राम्हण चलाते हैं वोही राह पर लोग चलते हैं संसारी लोग ब्राम्हण सों अज्ञा लेके काम करते हैं औ सभों से कहते हैं कि ब्राम्हण सो पूछ लिया है।

बड़े ताजुब की बात है जिस का मुखिया बिगड़ा और अंन्धा हो गया।

आत्मा का बिचार न किया और न आत्मा को चीन्हा ऐसे ब्राम्हण कुलीन तिन का तो यह हाल है संसारी लोग को कौन गिने यह ब्राम्हण औ जजमान दोनो बेशक रसातल को जायगें और भारी नर्क मों पड़ गें औ बड़ा दुख भोगना पड़ेगा ।

देखो ।

जो कोई को मार के खाते हैं उनको बड़ा दुख भोगना पड़ेगा ताते तुम चेत के चलो जिवरा तुम्हारी बेहतरी होगी और परमपद को प्राप्त होंगे बड़ा आनंद करोगे अच्छे कर्मों पर चलने सो अच्छे फल को पाते हैं और बड़ा सुख आनंद को प्राप्त होते हैं ।

देखो ।

भजन औ ध्यान के समय मों किसी सो व्यवहार बात लेने देने का करना

न चाहिये क्यौं कि रगड़ा झगड़ा मों ग़ोस्सा औ तामस होता है ताते सुभ कर्मके बेलामों किसी सो व्यवहार बात करना न चाहिये।

देखो।

ग़ोस्सा तामस करने सो सुभ कर्मका फल जाता रहता है ताते एकान्त मों बैठ के ध्यान पूजा जप करना चाहिये।

देखो।

जिस मों कोई बात की बिघ्न न होय सीतल चित्त आनंद रूप धारण कर के सुभ कर्म करना चाहिये और सत्त बचन बोलना चाहिये तब सुभ कर्मों का फल होता है।

देखो।

मिथ्या झूठ बोलने सों अपना धर्म तो जाता है औ बड़ा दोस होता है औ बड़ा पाप होता है झूठा बचन बोलना न चाहिये।

सो देखो ।

लोग झूठी गवाही देके कतल करते हैं औ फांसी दिलाते ।

देखो तो झूठी गवाही देने सो कितना बड़ा पाप लगता है आखिर एक दिन तो भोगना पड़ेगा ।

देखो ।

सांच बराबर तप नहीं,
झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदय सांच है,
ताके हृदय आप ॥

और देखो ।

ब्राम्हणों के वास्ते झूठ बोलना कभी न चाहिये और जीव हिन्सा भी करना न चाहिये ।

और देखो ।

श्री ब्रम्हा जी का मुख्य वचन है ब्राम्हणों के धर्म को कहा है ।

श्लोक ।

नहन्यात् नमतिन्दद्यात्
हन्य मानं न पस्ययेत् ।
ब्राह्मण नाम मयं धर्मः
स्वयं ब्रह्मा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥

और देखो ।

गीता मों भी ब्राह्मणों के वास्ते श्री कृष्ण जी महाराज ने कहा है ।

ब्रह्म चिन्हन्ते ब्राह्मणाः
समदृष्टि सो पंडितः ।

देखो ।

ऐसा ब्राह्मणों का धर्म चाहिये सो ब्राह्मण लोग अपने धर्म को तो देखते नहीं दो पैसे के लोभ पर पठरू घर घर संकल्प कराते हैं अपने धर्म को ख्याल नहीं करते हैं ।

देखो ।

बातो में ब्राह्मणों के जन्म को खोते

हैं आखिर को चौरासी लक्ष जोनि नर्क आदिक मो पड़ के दुख भोगेंगे औ कल्पेंगे ।

देखो ।

सन्तगुरू का वचन है ।

दो० सच्चामों सुख होत है,
भूठा दुख का खान ।
कहैं कबीरर बिचार के,
याहि करो पहिचान ॥

और देखो ।

गीता मों अर्जुन सों श्री कृष्णचंद जी कहा है हे अर्जुन जो मनुष्य सच्चा बोलते हैं और सुभ कर्म आदिक करते हैं वह मनुष्य ब्रम्ह के समान हैं ।

और देखो ।

खुद भगवान ने अर्जुन सो कहा है कि सच्चा मनुष्य तो ब्रह्म समान हैं श्री कृष्णचंद जी का बचन है ।

और देखो ।

सन्त और ज्ञानी और भक्त जन यह तीनों का उज्जल कर्म औ क्रया है यह तीनों पुरुष तो शुभ कर्म को करते हैं।

देखो ।

यह सब एक राह पर चलते हैं और अपने पद पर स्थिर होते हैं।

देखो ।

सन्त लोग और ज्ञानी लोग और भक्त लोग देखो सन्तोष वृत्ति सो रहते हैं परमेश्वर का भजन औ कीर्तन करते हैं और आनंद रूप सों रहते हैं ।

देखो।

उन को परमेश्वर अच्छा कुछ के भो-जन का पदार्थ भेज देते हैं ।

देखो ।

जो कोई शुद्ध रूप होकर परमेश्वरको याद भजन करते हैं औ उन का जस

औ गुनानुवाद गाते हैं तब तो परमेश्वर अपने जन पर सहायता करते हैं औ सदा साथ रहते हैं ।

देखो ।

ऊधो जी से श्री कृष्णचंद जी ने कहा है। जो जन ऊधो मोहि न बिसारै ताहि न छाड़ों एक घड़ी ।

देखो ।

ऐसा त्रिलोकीनाथ ने कहा है भक्त का लक्षण और अपनी कृपाका वर्णन किया है और देखो संसारी लोग आठो पहर धंधा और रोजगार मों लगे रहते हैं ।

देखो ।

एक घड़ी भी सतसंग मों लोग नहीं जाते हैं ।

देखो ।

जहां पर सतसंग होता है तहां पर लोग एक घड़ी जा के कथा पुराण सुनै-

तो बेशक ज्ञान प्राप्त होय काहे कि सतसंग मों जाने सो अवश्य ज्ञान प्राप्त होता है।

देखो।

प्रेम सो कथा पुराण को चित्त दे के सुनो कुकर्म भी छूट जाय।

देखो।

सतसंग का फल निष्फल होता नहीं क्योंकि रामायण मों गोसाईंजी ने कहा है सो सुनो—

चौ० मज्जनफल पेखिये ततकाला।
काक होंहिं पिक बको मराला॥
सुनि आचर्ज करै जनि कोई॥
सतसंगति महिमा नहिं गोई।

और देखो।

दो० सतसंगत निज कल्प तरु,
सकल कामना देत।
इमृत रूपी बचन कहि,

तिहूं ताप हर लेत ॥

देखो ।

सतसंग मों जाने सो बड़ा आनंद औ सुख होता है और आत्मज्ञान सत-संग मों जाने सो प्राप्त होता है।

और देखो ।

जिस का बड़ा भाग्य होता है सो सतसंग मों कहीं पर जाता है और सतसंग करने सों जीव का उधार वो कल्यान होता है।

और देखो ।

सतसंग के प्रताप सों परम पद को पाते हैं ।

और देखो ।

सतसंग की महिमा और कहा है ।

दो० तात स्वर्ग अपवर्ग सुख,
धरिय तुला एक अंग ।
तुले न ताही सकल मिलि,

जो सुख लव सतसंग ॥

और देखो।

प्रथम भक्ति ग्यान तब बैराग्य तब बिग्यान होता है।

और देखो।

चित मों भक्ति उपजो तब सतसंग मों कहीं पर गया तब कथा पुराण सन के ग्यान प्राप्त हुआ तब चित मो बैराग उपजा तब बिग्यान रूप हो गया

देखो।

जब कोई वस्तु की इच्छा न रही तब ब्रम्ह सरूप मो प्राप्त हो गया औ बडा आनंद रूप पाया मुक्ति का रूप हो गया आवा गवन सो छुट्टी हो गई।

और देखो बिन्दाबन ने ऐसा कहा है।

मुक्ति होना क्या है और किस जतन सों मुक्ति प्राप्ति होती है।

देखो ।

सुरत का सत शब्द के हजूर होना याने नौ द्वारे से चढ़ कर सत्त लोक में पहुचना मुक्ति है ।

देखो ।

सत्त शब्द का मंडल प्रकास है और ऊपर है ।

देखो ।

अनहद शब्द के सुनने से सत्त शब्द की प्राप्ति होती है ।

देखो ।

जब भुक्ति होती है औअल संन्तों ने बानी का पाट और नाम का सुमरन मालिक की तरफ़ प्रेम सो करते हैं इश्क़ या ने प्रीत या ने मोहब्बत याने जगत से वैराग्य होकर साधु औ गुरू का सेवा औ संगत साधू सन्तों का और चन्द शग़ल और ज़िक्र भी कही है ।

मगर देखो।

शब्द का ध्यान सब पर बाला है।

देखो।

इस को कोई कोई समझता है औ उपासना का अंत सोइ ज्ञान की प्राप्ति है बहार बृंदाबन मों कहा है।

और कबीर साहेबभी नांदका ध्यान अच्छी तरह सो बर्णन किया है।

देखो।

सत्त सब्द मों बड़ा प्रताप है।

देखो।

सत्तलोक करोड़हांकोसका पन्थ है।

देखो।

शब्द के संग हो कर यह हंस पल मात्र मों सत्तलोक पहुंच जाता है।

देखो।

सतशब्दमों सुरतीको प्रवेश करो तो तुरंत सत्तलोक में पहुंच जाओ और बड़े आनंद मों रहो।

देखो।

ऐसा मोकाम मों यह जीव पहुंचा कि तहां कोई बस्तु की इच्छा न रही जहां पर सब वस्तु पूरन है।

और देखो।

दस तरहका अनहद शब्द होता है। औवल पहला शब्द चिन्ह शब्द होता है।

देखो।

दूसरा शब्द चुनचुन झिनशब्द होता है।

देखो।

तीसरा शब्द घनटी का होता है चौथा संख की आवज़ होती है पांचवां बेनु की अवाज़ होती है छठा ताल की आवाज़ होती है सातवां बांसुली की आवाज़ होती है आठवां मृदंग की आ-वाज़ होती है नवां नफ़ीरी की आवाज़ होती है दसवां बादल की गर्ज होती है।

और देखो।

इस की पहचान शब्द सुनने वालों

को देखो जब औवल पहला शब्द सुने तो रोम सब बदन का उठै दूसरा शब्द सुने तो बदन में आलस आवै तीसरा शब्द सुनै तो प्रेम की बढ़ती होवै ।

देखो ।

चौथा शब्द सुने तो मस्तक औ नयन सो खुशबू आवै पांचवां शब्द सुने तो अमि उतरने लगे छठां शब्द सुने तो गले के नीचे अमी आवे सातवां शब्द सुने तो अंतरजामी हो जावे आठवां शब्द सुने तो शब्द सारे बाहर भीतर सुनपड़े नवां शब्द सुने तो गुप्त होजाने का समर्थ हो जावे दसवां शब्द सुने तो सब बासना छुट्टी हो जावे ।

देखो

ब्रम्ह हो जावे दसवां शब्द सुनने से सब बासनां नास हो जाती है ।

परब्रह्म हो जाता है तब आवागवन

सों छुट्टी होती है और बड़ा आनंद होता है जब आत्म विचार करे तो परम पद को प्राप्त होय ।

शब्द की महिमा सत्तगुरू ने कहा है शब्द से वेद का उत्पति है ।

शब्दे धरती शब्द आकास। शब्दे शब्द भया प्रकास । जो जाने शब्द का भेव । आपे कर्ता अपे देव ॥

देखो शब्द सत्त है ।

मैं क्या हूं और जतन अपने आधीन है या ईश्वर के या प्रारब्ध के ।

तूं जीव है मन औ सुर्त मिला हुआ है।

और देखो ।

नौ द्वारे से सहस्त्र दल कमल तक जो गगन का नाका है ।

वहां तक मन है आगे केवल सुर्त है।

और देखो ।

सवो गौर शब्द जो घट मों हो रहा

है उस के आसरे त्रकुटी में चढ़ कर दसवें द्वार में पहुंच कर सून में मान-सरोवर में स्नान कर के हंस दसा को प्राप्त होता है।

देखो।

यह सुर्त चेतन है श्यामकुंज में तेरा वास है।

तेरा प्रतिविम्ब और भास सारे शरीर मों है कीर्ति बसन्त गौरों के आधीन है

दो० तीन बन्द लगाइ के,
अन हद सुने टकोर।
नानक सुन्न समाध में,
नहीं सांझ नहिं भोर॥

देखो।

यह नानक जी का मत है।

सन्तों ने नाद की उपासना में वेद सों दो तीन मोकाम और ऊपर निशा-न दिया है।

उस का भेद वेद है।

और देखो।

सृष्टि का कर्ता कौन है और कहां है और कैसा है और माया क्या है।

देखो।

शब्द सृष्टि का कर्ता है और भ्रमर गुफा मों है और भ्रमर गुफा ब्रह्माण्ड के पार है।

देखो।

वही शब्द कर्तापुरुष सिर्जनहारा है। उस की इच्छा कुदरत माया है।

देखो।

जगत क्या है औ कहां से कब पैदा हुआ सत्त है या असत्य है स्वप्न सृष्ट औ जगत में क्या भेद है और किस को भासता है।

देखो।

सत्तपुरुष के इच्छा सों निरंजन उत्पत हुआ निरंजन सो जगत उत्पत हुआ निसबत सत्त लोक के यह परपंच है औ असत्त है।

देखो ।

नौ द्वारमें जो सुर्त है उसको भासता है।

देखो ।

सपन श्रोष्ट मनका रचा हुआ है और यह जगत निरंजन का रचा हुआ है

देखो ।

मन का स्वभाव चंचल है और शब्द पर आशिक़ है ।

देखो ।

जैसे मृगा वेन की आवाज़ सुन के अपने तन का सुध नहीं रखता है ऐसे मन भी शब्द सुन के आशिक़ हो जाता है । जब शब्द सुनता है तब वश हो जाता है ।

देखो ।

मन बिना किसी सहारे ठहरता नहीं और कोइ सहारा ऐसा नहीं है जैसा के शब्द का सनना है ।

देखो।

इस मो मन लग जाता है और जगको भूल जाता है और मालिक को पाता है।

देखो।

सुन पड़े अनहद का बाजा।
पर जासे जस होवे रजा॥

सभे साज है तन में वैजन मचा है एक से एक रंमे।

और देखो।

सार शब्द जेहि सुन पड़ो बड़ो है वाको भाग आवागमन सो बच रहा।
सहजे प्रभुपद लाग॥

और देखो।

सुख दुख किस को होता है और क्यों होता है और बाद मरने के जीव कहां जाता है।

देखो।

दुख सुख होता है जीव को जो नौहारे मों है उस को होता है।

कर्म अनुसार जीव का गवन आसा के बमौजिब होता है।

और देखो।

परलोक क्या है सत्त या क्या है।

देखो।

परलोक जहां सत्त शब्द है ऊपर है सत्त है आनंद से भरा हुआ है।

और देखो।

नाम क्या है और कौन नाम सर्व ऊपर है और नाम नामी अभेद है या क्या है और शब्द क्या है और सब में उत्तम कर्म कौन है। जवाब।

देखो।

नाम सोहं सत नाम है येही नाम सर्व ऊपर है।

देखो।

शब्द एक आवाज़ है और खुद चेतन है पुर्ष है।

देखो ।

आसमान के ऊपर सून्न महां सून्न के परे हैं ।

देखो ।

मस्तक मों भी वह शब्द है जो सून्न महां सून्न मों है सो सूर्त मस्तक के सून्न महां सून्न में चढ़ कर असल शब्द जो आसमांन के ऊपर है ।

उस में पुर्ष के कला सो पहुंच जाता है और निज धाम पाता है बड़ा आनंद होता है ।

देखो ।

सब में उत्तिम कर्म साध गुरु का सेवा औ सतसंग और उपासना शब्द का ।

देखो ।

औअल शब्द है औ पीछे बेद है क्योंकि शब्द से बेद की उत्तपति कही है ।

क्योंकि अब कलजुग में कर्म नहीं बन सकता है ।

देखो ।

नहीं ऐसा ज़माना है औ नहीं ऐसा उमर है औ नहीं लोग वेफ़िकिर हैं ।

मगर कर्म और जुगों में बन सकता था अब कलजुग में नहीं बन सकता है ।

देखो ।

इस जुग में जो राह सन्तो ने निकाली है याने साध गुरू की सेवा और नाम का सुमरन और शबद का उपासना ।

देखो ।

यह सुगम है ।

और देखो ।

जैसे कि बादशाही सड़कें अब सभ बन्द हैं ।

अंगरेजी सड़कें सब जारी हैं ।

देखो ।

बादशाही सड़क पर न खाने को मिलता है नहीं सराय है नहीं हिफ़ाज़त है ।

देखो ।

अंगरेज़ी सड़क पर सभ कुछ मिलता है खाने पीने को ।

देखो ।

बादशाही सड़क पर जाने सो नुक़-सानी और परेशानी होती है ।

और देखो ।

सेवाय इस के सेवा चैतन्य की करना इस क़दर बेहतर है ।

कि देखो हज़ारहां वर्ष सेवा जड़ का करना एक तरफ़ है और चैतन्य की सेवा करना एक दिन तो भी बराबर नहीं है ताते चैतन्य को मानना चाहिये ।

चेतनको सेवा सबसे उत्तिम होती है।

दो० अस निज मत सतनांम का,
सहज मुक्ति को पावो ।
बिन्दा बन जग तरन को,
शबद सुरत मो लावो ॥

देखो ।

परम पद पानेकी एहि सब राह हैं।
औ सत्तगुरु का बचन है ।

दो० तीर्थ गये को एक फलः,
सन्त मिले फल चार ।
सत्त गुरु मिले अनन्त फल,
कहे कबीर बिचार ॥

देखो ।

शास्त्री ग्यान सब इल्म है और ग्यान हद शब्द का सुनना भी इल्म है। बग़ैर अमलके इल्म से क्या फ़ायदा।

देखो ।

जैसै कि बीजक पालिआ मगर दौलत न मिली तो बीजक से क्या फ़ायदा यह मता सन्तो ने कहा है सो सत्त है ।

देखो ।

दो० बस्तु कहीं खोजै कहीं,
बस्तु हाथ न्हि आव ।
कह कबीर सन्तो, सुनो ॥

बिन सत्तगुरु ना पावे ॥

चौ० सतगुरु मिलैं तो सत्त लिखावे ।
बांह पकड़ के घर पहुंचावे ॥

और देखो ।

सतगुरु संग ज्ञान नर पावे ।
बिनु सतगुरु नर कूप मों जावे ॥
बिन चीन्हे नर बन खंड जाहीं ।
अन्न त्यागि नर बन फल खांहीं ॥
बिन चीन्हे नर पियहिं दूधा ।
गहहिं टेढ़ मग त्यागहिं सूधा ॥
बिन चीन्हे पंचाग्नि तापे ।
ओअं सोहं बहु बिधि जापे ॥
तो भी नाहिं परम पद पावे ॥
जम के दंड आप सिर खावे ।
बिन चीन्हे नर चढ़ते तूला ।
सो नर अधिक जगत मों भूला ॥
बिन चीन्हे नर अर्ध मुख भूलें ।
सो तो माया मोह मों भूलें ॥

बिन चीन्हे कासी करवट लीन्हा ।
सो तो आप जमपुर पगु दीन्हा ॥
बिन चिन्हे परदच्छिणा फिरैं ।
सो तो भौचक्कर मों गिरैं ॥
बिन चिन्हें नर हाथ सुखावैं ।
ऊर्ध हाथ आप दुख पावैं ॥
बिन चिन्हें नर मौन हो रहैं ।
सो नर अवस गूंग तन लहैं ॥
बिन चिन्हे नर पूजहिं भूता ।
आनि चढ़ावें बकरी पूता ॥
बिन चिन्हें नर जय बढ़ावें ।
हाथ बेंत लै मूड़ डोलावें ॥
बिन चिन्हे जिव घात करावै ।
सो तो जन्म नर्क मों पावै ॥

इन के दुख का हाल को कह सके अब तो जन्म भर दुख भोगना पड़ा। अपने करतबका फल अपने को भोगना पड़ा ताके ध्यान कर के देखो आत्मघात

कभी नहीं करना और सत्तगुरुके बचन पर रहना तुम्हारी बेहतरी होगी और परमपद को प्राप्त होगे औ बड़ा आनंद होगा ।

देखो ।

दो० सांझ सबेरे हरि भजे,
उद्यम कर के खाय ।
तुलसी यह संसार सो,
सहज स्वर्ग को जाय ॥

देखो ।

परमपद पाने की ये सब राहें हैं औअलदया दूसरा चमा तीसरा सीलता चौथा सन्तोष पांचवां समिता छठा प्रेम सातवां सच्चा रूप रहे समाधान । सुद्ध रूप होय सुमिरे नाम। तब हंसा पावे बिश्राम ।

जब अपने को ज्ञान पक्का होय और ब्रह्म पद मों लीन रहे और ब्रह्मपद पर

बैठे और ब्रह्म का कर्म धारण करे और ब्रह्म की चाल चला करे और ब्रह्मरूपसी हो के रहे तब तो अद्वैत ज्ञान कथे और द्वैत दुर्भाव किसी सो न करे न किसी को दुर्बचन कहे और संसारी कर्मको न करे और माया मोह तामस परहरे हौर चित्त मों लोभ बिखाद न करे स-मता रूप को धारण करे ऐसा होय तो अद्वैत कथे तब तो कहना सब पूरा पड़े।

इतना कर्म जो न बन सके तो स्वामी सेवक हो के रहे नहीं तो अवश्य भौ सागर मों पड़े नाना यातना मों संकट सहे।

देखो ।

गुरु बिनु संकट कौन हरे ।
कर्मी जीव कैसे के तरे ॥
गुरु के ध्यान मे एक रस गड़े ।
सो जीव भौनिधि नहिं पड़े ॥

गुर बिन भौ निधि पार न परे ।
गुरु के सरन जीव सब तरे ॥
द्वैत ज्ञान कर सहजे उबरे ।
अद्वैत ज्ञान कर बिरले तरे ॥

देखो ।

सतगुरु का बचन सत्त है औ वर्तमान सत्त होता है ।

गुरु के सरन मो जीव का उबार होता है ।

देखो ।

बिना गुरु के ज्ञान तो होता नहीं बिना ज्ञान के बैराग्य होता नहीं बिना बैराग्यके बिज्ञान होता नहीं और बिना विज्ञान के देखो जीव तरता नहीं और जीव को छुट्टी होती नहीं औ परमपद को पाता नहीं ।

जब विज्ञान रूप मों प्राप्त हो गया तब आवागवन औ जन्म मरन सों छुट्टी

हो गई तब निजधाम को प्राप्त होगया तब बड़ा आनंद भया आनंद का रूप हो गया सब तरह सो विश्राम पद को पा गया ।

देखो—सतगुरु का बचन है जो कोई परमेश्वर को याद और भजन और जस और उन के गुनानुबाद को गाते हैं। वह मनुष्य देखो परमेश्वर के प्यारे होते हैं औ परमेश्वर के नज़दीच मों रहते हैं और परमेश्वर अपने समान कर लेते हैं औ निज रूप दे देते हैं ।

देखो ।

परमेश्वर के भजन करने सों लोग अच्छे फल को प्राप्त होते हैं और अच्छे कर्म करने सों अच्छे फल को पाते हैं ।

और देखो ।

अपने कर्तबों का फल दुख सुख होता है और अपने मन मों बिचार कर के

देखो तो इन बातों का ग़ौर करो कि कौन ऐसा भारी क़सूर किया है सो दुख औ तकलीफ़ को भोगते हैं।

सो तो ग़ौर करते नहीं और आप सों भ्रम खड़ा करते हैं और कहते हैं कि घर के देवता देबी दुख देते हैं

देखो-भगतीया को बुला के आपे देवता खेलाता है और भगतीया सोखा का नाम ले के नाचता है और गले मों बेंत पहिरकर हाथ मों सेली लेकर कूदता है और नाचता है औ भ्रम खड़ा करता है कि घर के देवतों का खोट है। और कहता है चारपठरू देवता को देवो तो देवता माने गा ऐसा भगतीया ने कहा औ फ़रमाया और भ्रम को अच्छी तरह सो पक्का कर दिया।

देखो-भगतीया सब भी बड़े२ ज़मीं-दारोंकनें आठ२ पठरूका गला कटवाता

है और जीव घात करवाता है यह तो जुल्म की बात है आप तो बिचार करते नहीं और भगतीया सारे के कहने पर आठ आठ पठरू को मार कर पिण्ड पर चढ़ा कर सब मिल कर खाते हैं औ बड़ा खुसी होते हैं औ यह ख़्याल लोग न करते हैं कि जिस पापों से यह दुख औ तकलीफ़ होती है औ बीमार पड़ते हैं फिर लोग वही काम करतें हैं जिस कर्म करने से फिर दुख भोगना पड़ेगा चेत के चलो तो हत्या औ पापों से तो बचो नहीं तो जबाब देही देना पड़ेगा।

गुनाह गार को छुट्टी कैसे के होगी बेशक जमद्वारे मों दंड होगा।

बे गुनाह गार को दंड कहां सो होगा बेक़सूर तो दंड होता नहीं।

और देखो।

और बारबार सतगुरु सभों से कहते

हैं कि तुम चेत के चलो जियरा तुम्हा-
री बेहतरी होगी अंध कूप नर्क मों न
पड़ोगे जब चेत के काम करोगे तो सदा
सुखी बने रहोगे जब सतगुरु के वचन
पर चलोगे तब भौसागर सों बचोगे
कबहीं जवाबदेही नहीं पड़ेगी सदा
आनंद मंगल सोंरहोगे।

देखो—यह संसार मों कोई किसी का
नहीं है अगर देखो मतलब हासिल
हुआ तो साथ है औ नहीं तो लोग
फ़राक हो जाते हैं औ बात नहीं पूछते
हैं औ नज़र उठा के भी नहीं देखते हैं।

देखो।

कोई किसी का संगी नहीं है अपने
अपने दांव पर सब खड़े हैं।

यह संसार में अज्ञानी लोभी सत्रू
लोग जान मार देते हैं औ जो कुछ के
पाते हैं सो भी ले लेते हैं।

सचू लोग जीवों को बड़ा दुख देते हैं।

बिचार तो कोई संसार में करते नहीं थोड़े दिन की जिन्दगी में इतना बड़ा पाप लोग क्यों करते हैं।

यह संसार मों कोई किसी का नहीं है।

चौ० मातु पिता सज्जन सुत नारी।
निज निज स्वारथ के हितकारी॥
सब सम्बन्ध जगत को सपना।
या में है कोऊ नहिं अपना॥
करि विचार देखहु मन माहीं।
गुरु सम हित कोइ जग नाहीं॥

कुल परिवार न कोऊ जपना। गुरू दयाल सदा हैं हमपर जान दास निज अपना॥ मंगल दास कहैं कर जोरी यह जग है सब सपना। कर बिचार देखो मन माहीं गुरु सम हितू न अपना॥

दो० आदि अंत गुरु संग हैं,

जाको मन विश्वास ।
कहैं कबीर सो दास को,
कभी न होत बिनास ॥

और देखो ।

माया दो तरह सों संसार मों प्रगट हो कर बिराजती है एक तो जड़ माया दूसरी चेतन माया देखो स्त्री रूप मृग-नयनी रूप सों बिराजती है और चंद्र-मुखी है यह चेतन माया ।

दो० चंद्रमुखी के मुख निरखि,
विकल होहिं मुनि जान ।
ता पीछे जब नर फिरे,
होइ न क्यों हैरान ॥

देखो ।

जड़ माया तो यह है रुपया पैसा धन सोना चाँदी आदिक होती है यह जड़ माया मों है यह जड़ माया भी चेतन माया सों कम नहीं है इस माया को भी सब लोग चाहते है ।

देखो तो यह दोनों माया नारायण जी की है तिस में सब लोग माया पाके अपने मद में भूल जाते हैं यह न जाने माया नारायण जी की है सदा रहती नहीं।

सो देखो–यह माया पाके लोग नेक काम तो करते नहीं।

धन पा के लोग ज़ुल्म औ ज्यादती करते हैं और मारे ज़ोम के किसी को कुछ भी नहीं समझते हैं।

सब लोगों से दग़ाबाज़ी बेईमानी कर के धन आदिक को जमा करतें हैं औ जा़ल पात कर के माल मिलकिअत ग़रीबों को ले लेते हैं।

ठीका से लोग मोकर्री भी बना लेते हैं।

आक़बत के डर सो भी लोग नहीं

डरते हैं और धन के जोम से लोग ख़ून भी करते हैं और मारे ज़र के लोग ख़ून को भी पचा लेते हैं और अपने मन में इनसाफ़ कुछ भी न करते हैं प्रमेश्वर से क्या छिपा है आख़िर यह सब कर्मों का फल दुख भोगना पड़ेगा।

और देखो।

जड़ माया पा के मद औ अहंकार लोग करते हैं और तामसी रूप सों रहते हैं।

तामसी लोग नित्य हिंसा हत्या कर के खाते हैं औ कहते हैं हम तो नित्य ख़सी खाते हैं और मांस बिना रसोइ खाया जाता नहीं।

देखो--उन के करम में एहि बदा है कि हड्डी चाटे बिना कल्यान नहीं तामसी लोग यहि चाहते हैं।

बड़े २ ज़मीदार अज्ञानी लोग सब

मांस औ मछली खूब खाते हैं और इस को बड़ा पदार्थ समझ ते हैं औ कहते हैं कि हमारे बराबर दूसरा कौन खाने वाला है।

देखो—अभी तो बाबू साहब को खाते बड़ा अच्छा लगता इसका मज़ा तो बाबू साहब को पीछे मालूम होगा किसी को जान मार के खा जाना क्या ठट्ठा हुआ।

देखो।

जैसी अपनी जान तैसी दूसरे जीवों की जान सभों की जान तो एकै होती है ईज़ा औ तकलीफ़ सभों को बराबर होती है कुछ भी फ़रक़ नहीं होता है।

खानखा दूसरे जीवों को मार के खा जाना यह कैसी बात है बड़े ज़ुल्म की बात है।

जान मारने के बराबर तो दूसरा पाप नहीं होगा।

देखो-बड़ी हत्या होती है इस को लोग ख्याल नहीं करते हैं।

देखो-यह मनुष्य का जन्म लोग बातों में खो देते हैं और इस बात का ख्याल नहीं करते हैं।

देखो-जिभ्या स्वाद के वास्ते ये तो बड़ो हत्या जीव घात करते हैं।

जिस पाप से नाना तरह का दुख भोगना पड़ेगा और बड़ा दुख होगा और दुख भोगेंगे तब दुख का हाल मालूम होगा।

अभी तो धन जन जवानी औ ज़रा मस्ती के नशे मों लोग मगरमस्त हैं।

लोग आक़बत को ख्याल करते नहीं आइन्दे पर मेरी क्या गत होगी।

अभी तो बाबू साहब सब कोई कहता है औ बाबू साहब हिंसा का करना. तो छोड़ते नहीं।

इस पाप से मरे पर पसू आदिक मों जन्म पावेंगे और पसू से फिर कीरा मो जनम पावेगें औ· कर्म भोग नर्क में भोगेंगे जब इस देह से छुट्टी भई तब सूद्र आदिक मों जन्म लेकर जूठन को खायेंगे और खिदमतगारी करेंगे तब बाबू साहब को कहता है।

देखो-कर्म तो किया था हिसां हत्या जीव घात तिस का फल तो वैसाही भोगना होता है।

दो० करे बुराई सुख चहे,
कैसे पावे कोय।
बोवे बीज बबूर का,
आम कहां सो होय॥

देखो-करे पाप चाहे कबिलास।
बोवे जव गेहूं के आस॥

देखो-यह तो होना है नहीं बुरे कर्मों का बुरा फल होता है औअल फल कहां सो होगा।

औअल कर्म लोग करते तो बेशक औअलँ कर्म का फल होता और बड़ा सुख पाते।

देखो-जिन लोगों ने उस जन्म मों अच्छा कर्म किया था वही लोग यहां पर अच्छे महाजन कोठीवाल के यहां जन्म लेकर सुख राज भोगते हैं फिर भी दया धर्म पर उपकार जीवों पर करते हैं।

देखो-अच्छे कर्मोंके करनेसे धन लच्मी औ सन्तत पाते हैं और फिर भी अच्छे कर्मां को धारन करते हैं भूखे को अन्न प्यासे को पानी देते हैं और रूपये भी उपकार करते हैं औ अच्छा वचन सब को कहते हैं किसी को दुरबचन कहते नहीं औ प्रेम भाव सो बोलते हैं।

देखो-महाजन लोग सत्त औ सुक्रत सो रहते हैं और महाजनी बेहवार सत्या पर चलते हैं।

देखो-वाजिब लेते हैं और वाजिब वाजिब देते हैं किसी से बेइमानी नहीं करते हैं जिस का अमानत रखते हैं तिस को देने में बिलम्ब नहीं करते हैं जिस क़ौल पर रखते हैं उसी क़ौल के बमौजिब देते हैं अगर इस बात में कोई बात की बेइमानी करैं तो उनका कार बार सब बन्द हो जाता है।

देखो-अधर्म करने सों सब नास हो जाता है औ बिला जाता है।

देखो-सब तरह सें दुखी औ दरिद्र हो जाता है औ बड़ा दुख खाता है।

देखो-जो कोई जैसा कर्म कर्ता है तैसा फल को प्रापत होता है।

देखो-अपने कर्मों का फल आप पाता है अच्छा कर्म करे तो अच्छा फल को पाता है औ सुकर्म करने सो प्रम पद को भी पाता है औ जन्म मरण सो मुक्ति हो जाता है।

देखो-साधु सन्त गुरू औ ज्ञानी और बेद पुराण औ शास्त्र यह भी तो अच्छे कर्म करने को कहा है। और देखो सब ग्रंथकार भी अच्छे कर्म करने को कहा है क्योंकि अच्छे कर्म करने सो अच्छे फल को प्राप्त होता है।

औ देखो-जो कोई किसी को अख़ज़ याने अदावत् सो मार पीट कर रहा है। वह शख़्स जो सरन मो आ जावे तो जिस सुरत सो होये उस तरह सो बचा लेना जान की रच्छा करना बड़ा धर्म औ उपकार होता है।

और देखो-जो कोई किसी को मार रहा है और चार आदमी तमासा दे-खते हैं और उस को छोड़ा नहीं देते हैं। बड़ा दोष उन को होता है क्योंकि चित्त में दया न रक्खा। देखो जिन के चित्त मों दया धर्म नहीं कैसे इन का भला होता है।

देखो-कोई किसी पर मोकदमा झूठ बेकसूर आदावत सो चलावे औ परेशान करे तो वह शख्स आकर सज़ा और मोकदमे का राय पूछे तो उस को अच्छी सलाह देना जिस में उस की बेहतरी होये। देखो ऐसी सलाह कपट कर के नहीं देना कि जिस में वह शख्स फस जावे नही तो तुमको बिस्वासघात का दोष होगा। क्योंकि वह तो तुम्हारे विश्वाश पर रहा आया सलाह दिया है वह शख्स फस गया और तुमने उस्से कपट का खेल किया तो तुम्हारा भला कैसे के होगा तुम को तो यह पापों का फल भोगना पड़ेगा।

और देखो--जो कोई गोली या बंदूक सो जानवर और चिड़ियों को मारते हैं और मार के खाते हैं और मार कर बचते हैं उन लोगों पर परमेश्वरी दंड होता है।

देखो वह्दो लोग रास्ते मों चले जाते हैं तो एक मरातिब बादर ठनका और ऊपर सो उन पर धड़ धड़ी का बज्र गिरा औ उसी जगह छटपटा के मारे ज्वाला के मर गये कोई शख्स पानी देने वाला न रहा इतने बड़े पाप को किया था।

देखो-बहुत सी चिड़ियों और जानवरों को गोली से मारा था इन पापों से यह गत हुआ। देखो जो कोई गोली सों जानवर को मारते हैं उन पापों से रास्ते मों चले जाते हैं और प्यास लगा तो मैदान मों पानी न मिला तो छटपटा के लोग मर गये।

देखो-पच्छी सभ जल के प्यासे उड़ चले जाते थे। तिन को बिचे मों गोली मारा औ जानवर गिर पड़े मारे ज्वाले के छटपटा के मर गए औ पानी भी न पीने पाया बीच मो प्रान उन का लिया।

देखो–उन के बच्चे सब भी मर गये होंगे एत्ता बड़ा पाप अपने सिर पर लिया कि इस का हाल हम क्या कहें कि किस सूरत सो इनका कल्यान होगा और उबार होगा यह तो बड़ा दुख भोगेंगे ।

और देखो–यही लोग कहीं बरात मों या नौते पैहानो मों गये औ डेरा मकान मों मिला औ सब मिल के विश्राम किया और एक मरातिब उस मकान मों आग उठी और दरवाजा छेंक लिया किसी तरफ़ भागने को जगह न मिली ।

देखो–जितने सब लोग अग्नि के ज्वाला मों छटपटा के जल गये तब तो कुछ नहीं बन पटा गोली चलाने का जानवरों पर औ गोली सों मारने का मजा मालूम भया कि यह गतिको प्राप्त

भये कर्तबों का फल पाया जैसा कर्म किया था तैसा फल लोगों ने पाया।

और देखो—चेत के नहीं चलते हैं सत्तगुरु का बचन भी नहीं मानते हैं। जीव घात लोग करते हैं और जीवों को दखाते हैं।

और देखो—व्याह शादी मों हिंसा हत्या करते हैं। यही पापों से बड़ा दुख खाते हैं और कलपते हैं औ दरिद्र हो जाते हैं। और आंखों से भी अन्धे हो जाते हैं इन पापों से लकवा वो अर्धंग भी हो जाता है और बड़ा दुख खाते हैं औ चंद तरह को बीमारी होती है और बिलकुल अंग गिर पड़ता है।

देखो—जीते मों यह लोग नर्क भोगते हैं। और देखो—पाप करने से यही तो गंजन होता है और यहीं सब कर्मभोग भोगता है रोगोंके दुख भोगना होता हैं।

देखो--सत्त गुरु के विचन को सुने और ख्याल करे और मन मों बिचारे और बिबेक करे और चोत्त मे दया राखे और सुद्ध रुप हो के रहे औ प्रेम सो बचन कहे और जो कुछ भोजन को मिले सो प्रेम भाव सो भोजन करे मनमों सन्तोष वृत्ति सो रहे चित्त मों संका नहिं धरे परधन देख परम सुख लहे औ न काहू को निन्दा करे दुष्टभाव न चित्त मों धरे कपट भाव सब दूर करे दिल मों दोक्षा नाहिं करे न काहू सों कपट कर बोले मिथ्या बचनन कबहिं उचारे सब जीवनको हितकर जाने आप समान ज्ञान बिचारे तब तो परमपद को पावे।

और देखो।

चौ० मन चित्त हृदय सुद्ध कर राखो।
गुरु को बचन सत्त कर भाखो॥
सभ घट एक आतम पहचानो।

कर पहीचान सत्त के जानो ॥
चित मों दया धर्म बीचारो ।
औ पुनि अवश्य सत्त ब्रत धारो ॥
तब उहवां सत्त गुरु गुन गावो ।
गुरु प्रताप बिश्राम पद पावो ॥

देखो--यहां तो कोई अपना नहीं है काहे कि मात पिता सज्जन सुत यह सब नाहीं अपना। करि बिचार देखो मन मांहीं जग बेहवार सब सपना ॥ देखो कुल परिवार जहां लगि यह सब कोइ न अपना। अति असनेह कियो है सब से तन छुटे सब सपना ॥

दो० मणि मानिक मुक्ता कही,
तहां छबी नहिं देत ।
राजकीट तरुनी बदन,
सोभा अति छबि लेत ॥

और गुरु वह है जो गुरु कहलाते हैं। गु नाम अन्धारा जो है तिस को रू

प्रकाश करता है। गुरु का लक्षण यह कहता है।

और देखो—भ्रमरूपी संसार अन्ध-कूप मों यह जीव पड़ा है। देखो गुरु दयाल ऐसे हैं कि सब जीवों को ज्ञान देख कर यह भ्रमरूपो संसार अन्धकूप से गुरु निकाल देते हैं और परमपद को भेज देते हैं। गुरु ऐसे परम दयाल औ परमार्थी है।

चौ० गुरु समान हित दूसर नाहीं।
करि विचार देखो मन माहीं॥
गुरु के बचन सत्त के जानो।
तब निज जन्म सुफल कर मानो॥

देखो--साधु संत महात्मा के संगत मों करने सों ज्ञान प्राप्त होता है। सतसंग करने सो और सतसंग मो जाने सो नाना तरह का भ्रम नास हो जाता है और सतसंग करने सो ज्ञान प्रगास

होता है और अचिन्त रहता है। संसय भ्रम का भय नहीं होता है। सतसंग करने सों ईरषा और विषाद नहीं होता है क्योंकि सन्त और ग्यानी बिबेकी होते हैं। किसी को दुर्बचन नहीं कहते हैं। सभों को ग्यान प्रबोध करते हैं और दया दृष्ठि सों देखते हैं और सीतल चित्त आनंद रूप सों रहते हैं। देखो सन्त और ग्यानी का चित्त कोमल होता है। देखो संत और ग्यानी का यही लच्छण होता है।

और देखो अग्यानी लोग कौन कर्म नहीं करते हैं।

जीता जीव को वह मारते हैं। और चोरी बदमाशी वह लोग करते हैं और डकैती रहजनी भी वह लोग करते हैं और ठगी बटपारी भी वह लोग करते हैं। पराये का माल भी वह लोग मारते हैं

जुआ भी वह लोग खेलते हैं। देखो कौड़ी गिरी तहां बेइमानी की नियत करते है कहते हैं कि मेरादाव दूसरा कहता है कि मेरा दाव पड़ा है। आपस में बेइमानी भी वह लोग करते हैं औ झूठ भी अवश्य के वह लोग बोलते हैं और दगा फ़रेब भी वह लोग करते हैं और झूठे गवाही भी वह लोग देकर फ़साते हैं। और लोगों को विश्वास दे के वक़्त पर दग़ा देते हैं कहो यह कैसी बात है विश्वासघात का बड़ा दोष होता है और यही सब कर्म से लोग बड़ा दुख खाते हैं औ फ़ज़ीहत होते हैं तब भी चेत नहीं करते हैं। कैसे इन की बेहतरी होगी।

सतगुरु के बचन को तो मानते नहीं और अनीति करने को तैयार हैं। सतगुरु के वचन को सत्त माने और

जीवों पर दया रक्खे तो बेशक बेहतरी होती है। परमपद को प्राप्त होता है। और बड़ा आनंद होता है।

देखो-सतगुरुका सब जीव गुन गाते हैं और सतगुरु के कृपा सों मुक्ति हो जाते हैं और परम सुख को पाते हैं।

देखो-पुराण में जढ़ भर्थ जी की कथा वर्णन है।

एक समय में जढ़ भर्थ जी सूर्य नारायण जी को अर्ग दे रहे थे दरिया के किनारे में उसी समय एक हरिन गुरबिणि कूदती हुई दरिया के किनारे आई उस जगह पर बच्चा हरिन का दरिया मों गिर पड़ा तब जड़ भर्थ जी बिचार किया कि अर्ग देते हैं तो बड़ी हत्या होगी अगर जो नहीं निकालते हैं तो बह जायगा ऐसा बिचार के जड़ भर्थ जी तुरन्त उस बच्चे को निकाल

लिया और पालन करनेलगे और बच्चे की माय उसी घड़ी मर गई थी तब सो जड़ भर्थजी बच्चे को पालने लगे। बड़ी प्रीति सों और हरिन के बच्चे मों जड़ भर्थ जी की सुर्त रात दिन लगी रही। और उस बच्चे पर जड़ भर्थ जी बड़ी प्रीत रखते थे।

सो देखो हरिन का बच्चा एक रोज भाग कर जंगल को चला गया तब जढ़ भर्थ जी उस बच्चे को खोज२ के हैरान हो गए। और देखो हरिन के सोंच सो जढ़ भर्थ जी देह अपना छोड़ दिया औ हरिनमों जा के जन्म लिया।

देखो-जैसी अंत घड़ी सुर्ती होती है तैसे मों जाके जन्म लेना पड़ता है। और देखो जैसे मों सुर्त लगावोगे तैसे जोनी मों जन्म पावोगे इसी बात पर माहात्मा सब भी कहा है माया के

परिवार सों बहुत असनेह नहीं करना जैसा आसा करता है तैसे मों जन्म पाता है और देखो चैतन्य मों सुर्त लगावने-सो चेतन जामा लोग पाते हैं।

जढ़ मो सुर्त लगावने सों जढ़ आदिक अस्थावर जोनी मों जा के जन्म लेना पड़ता है। चार तरहका जो खान जीवों का नारायण जी रचा है। एही जढ़ मति लोगों को अस्थावर औ पसू आदिक मो जन्म होता है।

अस्थावर औ पशु मों जन्म ले के बड़ा पछताते हैं।

देखो—इस जन्म मों परचे ज्ञान कहां सो पाता है। पसू के जोनि मों बहा फिरता है और बड़ा दुख खाता है। और देखो जब घोड़ मों जन्म लिया तो ऐक्केवान ने ऐक्के मों धर के जोता औ रात दिन फुरसत नहीं देता औ

बग्गीवान के यहां गेश्रा तो वह बग्गी मो धर के जोता वह भी रात दिन फ़ुरसत नहि देता है।

और नोनीया के पाले पड़ा तो। घोड़े का सोरहो नौबत करता है नहीं चलता है तो मार डंगटे सो पीठ फोड़ देता है। और भरपेट खानेको भी नहीं देता है। और देखो भूखे प्यासे धूप मों पड़ा रहता है। और खोज पुच्छार भी कोई नहीं करता है घास दूब चर के रहता है पानो मिला तो पीता है नहीं तो प्यासा रह जाता है।

और जब गदहा मों जन्म होता है तब धोबी के इहां लादो ढोना पड़ता है और न चलता है तो डन्टा खाता है। और देखो बड़ा दुख खाता है और पछताता है।

और जब बैल मों जन्म पाता है

तो लोग गाड़ी मों जोतते हैं औ नहीं चलता है तो मार डण्डे सो मुंह चूर देता है। और देखो बड़ा दुख देता है औ तेली के यहां बिका तो आंख मों पट्टी बांधके कोल्हू मो घूमता है नहीं चलता है तो मार डण्डे सो पीठ फोड़ देता है।

और कुत्ते मों जब जन्म पाता है तब गली गली हांड़ो चाट ता है औ हड्डी इत्यादि को खाता है। और गली गली मारा फिरता है देखो जो लोग जढ़ मति होते हैं हिन्सा हत्या करते हैं तिन सब को एहो गति होती है।

देखो–हांथी मो जन्म पाता है तो बड़ा भारी पांवो में सीकर पड़ता है। धान औ कंडी खाने को मिलता है। और हाथी खाने मो पड़ा रहता है। देखो भर पेट खाने को भी न मिलता है।

और जो खग्गो पठरू मों जनम पाता

है तो देखो हत्यारे लोग चंडाल प-कड़ के पिंडा पिंडो मों बल दे के खा जाते हैं। और देखो गला रेत के प्रान ले लेते हैं और नाना तरह का दुख वह भी भोगते हैं और भोगना होता है ताते कुकर्म को त्याग करना और विवेक मों काम करना जाते कर्म बन्धन मों न पड़ो।

चौ० गुरु उपदेस हृदय मों धरो।
गुरु के सरनहि भौनिधि तरो॥
क्यों चौरासी संकठ सहो।
गुरु की कृपा सदा सुख लहो॥
जबपावो सतगुरु के धाम।
तब हंसा को होत बिश्राम॥

और देखो—ज्ञान तीन प्रकार का है औवल आत्मज्ञान दूसरा भलीबुरी वस्तु को जानना तीसरा परमेश्वर की पूजा करना व्रत आदिक करना भजन जप

सन्त सेवा करना और सुभ कर्म सब करना। देखो सुभ कर्म करते २ आत्म-ग्यान होता है तब परमपद को प्राप्त होता है। और देखो बिबेक करने सो मोह और भ्रम का नाश हो जाता है तब गुरु के चरन मों मन रत होता है तब अच्छा२ कर्म सूझता है और आत्मा का पहचान करता है।

और चित्त मो दया धर्म उपजता है तब दूसरे को उपकार करता है औ साधू सन्त की भक्ति करने सो यह ग्यान बुद्धि प्राप्त होती है।

और माया मोहमद और अहंकार लोभ और ईरषा और बिखाद का नाश हो जाता है और देखो अग्यानता मों लोग सब कुकर्म करते हैं।

हिंसा हत्या जीव घात ब्याह शादी मे भी लोग अवश्य करते हैं और ढोल बजा

के ब्राह्मण से पठरू को संकल्प करा के पिंडियों में बलदान देते हैं। और देखो लोग लोहू का टीका भी सब मिल कर लेते हैं। और प्रोहित जी भी टीका लेते हैं। देखो एक टका पैसा दच्छिणा लेकर बलदान की आज्ञा परोहित जी देते हैं और बड़े खुशी सों घर को जाते हैं। यह सब कुकर्म लोग अज्ञानता मों करते हैं औ परोहित जी भी अज्ञानता मो पठरू को संकल्प कराते हैं।

ज्ञान औ बिबेक कर के देखें तो आपे हज़ार कोस इन कर्मों से भागें और फिर भी यह काम कभी न करें अबिद कर्म सो सदा न्यारा रहे फिर भी ऐसा कर्म कबहीं न करें।

चौ॰ गुरु चरननमें जो सुर्त धरें।
सहजे भौसागर सों तरें॥
फिर भी चक्कर मों नहिं परें।

जीव जन्तु पर दाया करें ॥
बैष्णव कर्म को धारण करें ।
तब ही बिन प्रयास निस्तरें ॥
शुद्ध रूप होय अस्थिर गहें ।
साधु सन्त संग बिचरत रहें ॥
गुरु का बचन हृदय मों धरो ।
भौसागर से सहजे तरो ॥

और देखो-सब जीवों को दया औ दृष्टि सो देखते हैं ।

सन्त औ ज्ञानी का चित्त कोमल होता है औ दयावन्त होते हैं ताते सन्त और ज्ञानी का संगत करना और सुनो मनुष्य के लिये प्रमेश्वर ने खाने को हर तरह के अनाजों को पैदा किया है । और हर तरह के फलों को पैदा किया है । बासमती चावल क्या अच्छा खुशबू पैदा किया हैं ।

और देखो—दाल के क़िस्म मों रहर

औ मूंग क्या अच्छा पैदा किया है और चना मसूर उर्द औ केराव से ले खेसारी तक पैदा कर दिया है और देखो परमेश्वर ने रब्बी के किस्म मों गेहूं क्या अच्छा पैदा किया है। इससे पूरी कचौरी मालपुआ औ मोहनभोग आदिक होता है। ऐसे२ पदार्थ अमृत के समान होते हैं। देखो मनुष्य के लिये चंद तरह के पदार्थ को बनाया है। पकवान औ मिठाई भी अमृत के समान होते हैं।

मनुष्य के लिये नारायण जी ने ऐसे२ पदार्थों को रचा है कि हम नहीं कह सकते हैं। व्यंजन के किस्म मों अनेक तरह के चीजों को पैदा किया है।

देखो अचार निमकी और चटनी के किस्म मों कैसे२ चीजों को पैदा किया है। सो देखो गर्मी के समय मों कदुआ करैला झिंगनी नेनुआ परवर और ले-

तारू। देखो यह मनुष्य के लिये कैसे२ चीजों को परमेश्वर ने बनाया है व्यंजन के लिये ठंढे २ चीजों को उत्पत्त किया है। बरसात के समय में कन्दा ककड़ी ओल बर्रीन केला बोड़ा भो खखसी देखो ऐसे २ चीजों को बनाया है कैसे कैसे स्वाद की चीज परमेश्वर बिलग २ बनाया है मनुष्य के लिये एक से एक तरह के चीजों को पैदा किया है। यह सब चीजों का स्वाद और तृप्ति होने का हाल तो मनुष्य को मालूम होता है काहे कि हर तरह की चीजों का स्वाद मनुष्य लोग पहचान करते हैं औ जिसमें जैसा स्वाद है तैसो तारीफ करके लोग खाते हैं और कहते हैं कि बड़ा औवल व्यंजन होता है। सो देखो मालिक बड़ा प्रवीण औ बिबेकी हैं मनुष्य के लिये हर तरह की चीजों को पैदा किया है।

जाड़े के समय मों व्यंजन के लिये आलू बैगन कद्दुआ कोहड़ा करैलो और भी बहुत तरह के व्यंजन के लिये चीज सब बनाया है मनुष्य के लिये और कैसे२ फल औ फलहरि को बनाया है औवल आम क्या उमदा फल अमृत के समाम बनाया है।

अमरूद पेंउदी बैर अनार बड़हर फलेंदा तूत और अनेक तरह के फलों को देखो मनुष्य के लिये बनाया है।

सो देखो—ऐसा मालिक प्रबीण है। और मनुष्य के लिये ऊख कै तरह का पैदा किया है। देखो पौंढ़ा केतारी उमदा रस भरा हुआ बड़ा मोलायम और चीनिया भी क्या उमदा होती है। देखो ऊख सो मीठा का उतपत्त होता है। और उसी मीठा सो चीनी औ मिस्री भी होती है कन्द और ओला भो होता

और अनेक तरह की मिठाई भी होती है। ऐसे २ चीज मनुष्य के लिये रचा है। मालिक ऐसा प्रवीण कृपाल है।

और देखो—फलों में खरबूजा क्या उमदा फल बनाया है कि जिसके खाने से मिज़ाज तृप्त होजाता है।

और देखो-क्या उमदा खुशबू खरबूज़ा भी होता है। सबके चित्त भी भाता है।

एक से एक तरह का मेवा अमृत के समान मालिक बनाया है।

देखो-किसमिस क्या उमदा बनाया है और आबजोश मोनक्का अंजीर अखरोट पिस्ता गरी छोहारा बादाम चिरौंजी लौंग इलाएची और अंगूर देखो ऐसे२ मेवा क्या उमदा फल मनुष्य के लिये परमेश्वर अमृत के समान बनाया है। सो देखो अज्ञानी लोग ऐसे २ पदार्थ त्याग के अबिद चीज़ नाकिस खाते हैं।

देखो-जो चीज खाने योग्य नहीं उस को लोग अज्ञानता से सब खाते हैं ताते ज्ञान करके देखें तो अविद चीजों को नहीं खांए। देखोधन पाके अच्छे २ पदार्थों को भोजन करें और मित्र आदिक दोस्त मोहब्बतियों को भी खिलावना चाहिये।

और उज्वल कर्म करना चाहिये।

और सुनो—राम जीसे और वाष्टिट जीसे सम्वाद है सो सुनो वासिष्ट जी बोले हे राम जी जो केवल देह इन्द्रीयों से करम करता है औ मन सो नहीं करता जो कुछ के यह करना है सो कुछ न करता जो कुछ इन्द्रीयों से इष्ट प्राप्त होता है उससे छन मात्र सुख प्राप्त होता है उस छन प्रसन्यता मे जो बन्धमान होते हैं वह बालक वत्त मूर्ष हैं और जो ज्ञानमान हैं उस में बन्धमान न होते हैं

हे रामजी बानछाही इस को दुखी करता है जो सुन्दर बिखे की बानछा करता है जब जतन से उसकी प्राप्ति होती है तब मध्य छन सुख होता है फिर बियोग होता है तब इस को दुख दे जाती है इस कारन इन की बाञ्छा त्यागना जोग्य है इन की बाञ्छा तब होती है जब स्वरुप का अज्ञान होता है और देह आदिक में भाव होता है जब देहादिक मों अहंग भाव होता है तब अनेक अनर्थ की प्राप्ति होती है इसे हे राम जी ज्ञान रुपी पहाड़ पर चढ़ कर रहना अहंता रुपी गड्ढे में नहीं गिरना हे राम जी आत्मारुपी ज्ञान सुमेर परवत है उस पर चढ़ कर के फिर अहंता अभिमान कर के गड्ढे में बास लेना बड़ी मुर्षता है जब दिसे भावको त्यागोगे तब अपने सुभाव सत्ता को प्राप्त होवोगे जो सम सान्त रुप है

और बिकल जाल सभ मिट जावेगा और समुद्रवत्त पुर्न होवोगे द्वैत रूप न फुरेगा जब हृदय मों बिष को बिष जाने तब मन भी निरस हो जाता है चित्त निहसंग हो जाता है वास्तव मो देखो तो सभ मों सत्ता समान रूप ब्रह्मचिद घन अस्थित है उस्से द्वैत सरूप के परमाध से भासता है हे राम जी आत्मा का अग्यान हीं बंधन रूप है औ आत्मा का बोध मुक्ति रूप है इस्से बल कर के आप को आप ही जागो तब इस बंधन सो मुक्ति होगी हे राम जी जिस मों बिषों का स्वाद नहीं और जिस में उन को अनुभौ होता है वृतान्त अकास वत् मिर्मल सत्तावासना से रहित है जो बासनासे रहित होकर के पुर्ष कुछ क्रया करता है वह बिकार को नहीं प्राप्त होता यदपि अनेक छोभ

आन प्राप्त हो तौ भी उस का बिकार कुछ नहीं होता ज्ञाता ज्ञान गये इन तीनों आश्रम रूप भास्ते हैं जब ऐसे जाना तब भय किसी का नहीं रहता चित्त के फुरने से जगत उत्तपत होता है चित्त के अफुर हुए लीन हो जाता है जब बासना सहित प्रान लीन होजाता है तब जगत उदय होता है जब बासना सहित प्रान लीन होता तब जगत में लीन होता है अभ्यास करके बासना औ प्रानों को अस्थित करो जब मुर्षता उदय होती है तब कर्म उदय होते हैं और मूर्षता के लीन हुए कर्म भी लीन होते हैं इस्से सतसंग और सत्त शास्त्रों के बिचार से मूर्षता को छय करो जैसे वायु के संग से धूर उड़के बादल अकार होता है तैसे चित्त के फुरने से जगत स्थित होता है हे राम जी जब चित्त फुरता है तब नाना

प्रकार का जगत फुरता है और चित्त के अफुर हुए जगत लीन होजाता है। हे रामजी बासना सान्त हो अथवा प्रानो का निरोध हो तब चित्त अचिन्त होजाता है जब चित्त अचिन्त हुआ तब प्रम पद को प्राप्त होता है हे राम जी जिसे दरसन समबंध के मध्य में जो परमाऽलम सुख है जो एकान्त सुख है सो समित ब्रम्ह रूप है उस के साक्षकार हुए मन क्षय होता है जहां चित्त नहीं उपजता सो चित्त से रहित अकीरति सुख है ऐसा सुख सब परम भी नहीं होता है जैसे मारु थल में वृक्ष नहीं होता तैसे चित्त सहित विषय के सुख नहीं हो तो चित्त के उप सम मों जो सुख है सो अवाच है बानी से कहा नहीं जाता उस के समान और कोई सुख नहीं और उस से अतिसय सुख

भी नहीं और सुख नास हो जाता है
और आत्म सुख नास नहीं होता अवि-
नासी है उपजने और विनाश होने से
रहित है हे रामजी अबोध करके चित्त
उदय होता है और आत्म बोध कर के
सान्त हो जाता है जैसे मोह कर के
बालक को बैताल दिखलाइ देता है
मोह के नष्ट हुए बैताल नष्ट हो जाता
है तैसे अज्ञान से चित्त उदय होता है
अज्ञान के नष्ट हुए नष्ट हो जाता है
जब विद्यमान भी चित्त भासता है तब
भी बोध से निर्बीज होता है जैसे
तामा पारस के साथ मिल कर सोवर्ण
होजाता है अकार तो वही दृष्टि होता
है परन्तु तामें भाव का अभाव हो
जाता है तैसे अज्ञान से जगत भासता
है और ज्ञान से चित्त अचिन्त होजाता
है और जड़ जगत नहीं भासता वही

ब्रह्म सता हो कर भासता है सत्त पद का प्राप्त होता है परन्तु नाम रूप तैसे ही भासता है हे राम जी ग्यानो का चित्त भी क्रिया कर्ता दृष्टि आता है परन्तु चित्त अचिन्त हो जाता है जो अग्यान कर के भास्ता है सो ग्यान कर के गुन हो जाता है जो कुछ जगत अबोध कर के भास्ता था सो बोध कर के सान्त हो जाता है फिर नहीं उपजता वह चित सान्त पद को प्राप्त होता है कुछ काल तो भी तूरिया अवस्था स्थित हुआ बिचरता है फिर तुरीया तीत पद को प्राप्त होता है और अर्ध ऊर्ध मध सब ब्रह्म ही सम इस प्रकार अनेक हो कर अस्थित हुआ है अनेक भ्रम कर के भी एक ही है और सर्व आत्म ही है चित आदिक कुछ नहीं इति श्री जोग वासिष्ट निर्वाण प्रकरण

चित सता सुख नाम तेतालीसवां सर्ग
मों देखो सर्व आत्मिहि व्यापित है ।

साखी ।

दो० कर बहियां बल आपना,
छांड़ पराई आस ।
जा के घट नदिया बहे,
सो कस मरे पियास ॥
सीतल जल मृग तृषतवत,
गगन कमल के बास ।
सुंदर अति वांझा सूअन,
एसे हि जगत प्रगास ॥
रजत सीप मह भास जिमि,
जथा भानु कर बारि ।
जदपि मृषा तिहु काल सो,
भ्रम न सके कोउ टारि ॥

देखो ।

दो० अपने को थिरता गहे,
मन में करे बिचार ।

नाना भ्रम को टार के,
आतम ग्यान निहार ॥
जगत रचा केहि कारने,
उपजा दुख का मूल ॥
तब औखद करने लगे,
तामो ऐसी भूल ॥ १ ॥

और देखो।

चाह चमारी चूहरी,
अति नीचन से नीच।
तूतो पूरन ब्रह्म था,
जो चाह न होती बीच ॥

और सुनो—साखी कबीर साखी धर्म दास का प्रश्न।

दो० कौन पवन घर सन चरे,
कौन किया प्रगास।
नाद बिन्द जब ना हता,
तब कहां किया निवास ॥

सुनो गुरु का बचन।

दो० हुलास पवन घर सन चरे,

पंच मों किया निवास ।
नाद बिन्द जब ना हता,
तत्त में किया निबास ॥

प्रश्न ।

दो० सकल पसारा पवन का,
सात दीप नौ खंड ।
कौन नाम है पवन को,
जो गाज रहा ब्रह्माण्ड ॥

गुरु का बचन सुनो ।

दो० सकल पसारा पवन का,
सात दीप नौ खंड ।
सोहं नाम उस पवन का,
जो गाज रहा ब्रह्मण्ड ॥

प्रश्न ।

दो० कौन पवन धरती बसे,
कौन पवन आकास ।
कौन पवन ब्रह्मांड में,
कौन पवन परगास ॥

गुरु बचन ।

दो० धीर पवन धरती बसे,
अकह पवन आकाश ।
मेघ पवन ब्रह्मांड मो,
अग्र पवन परगास ॥

चेला बचन ।

कौन पवन ले आवे,
कौन पवन ले जाय ।
कौन पवन भरमत फिरे,
सतगुरु कहो बुझाय ॥

गुरु बचन ।

सहज पवन ले आवे,
सुर्त पवन ले जाय ।
सुर्त समाना सब्द मो,
तब को आवे जाय ॥

चेला बचन ।

मांटी मो मांटी मिली,
मिला पवन मों पवन ।

मैं तोहि पूछों पंडिता,
दो मे मुआ सो कौन ॥

गुरु बचन ।

देही सो मट्टी भई,
मिटा बाद हंकार ।
दोनो का मेला मुआ ॥
कहें कबीर बिचार,
थोड़ा दिनका जीवना ।
तामो बहु जनजाल,
कहें कबीर सब दूर करु ॥
आतम दृष्टि निहार,
पिण्ड प्राण को तज चले,
मुआ कहे सबकोय ।
जग मो जीवत मू रहे,
तेहि छन मुक्ती होए ॥
कबीर सुमरन माला स्वांस की,
कोइ फेरे निज दास ।
चौरासी भरमें नहीं,

कटे कर्म की फांस ॥
मन माला तन मेखला,
भौका करे बिभूत,
राम मिलें सभ देखते ।
सो जोगी अवधूत,

देखो ।

दो० अज पा सुमरन घट बिखे,
दिन्हा सिरजन हार ।
रन रोही संग्राम में,
रह गई मारे मार ॥
बाहर कहां देखाइये,
अंतर जपिये नाम ।
सुर्त मिले जब सब्द में
तब पावे बिश्राम ॥
कबीर माला काठ की,
बहुत जतन कर फेर ।
माला फेरे स्वांस की,
जामें गांठ न मेर ॥

स्वांसा सुमरन होत है,
ताहि न लागे बार।
पलक पलक कर बन्दगी,
देखो दृष्टि पसार॥
कबीर-ओठ कंठ हाले नहीं,
नहिं जिभ्या होत उचार।
गुप्त बस्तु जो कोइ लखे,
सोई हंस हमार,
सुन मन्दिल मो घर किया।
बाजे शब्द रिसाल,
रोम रोम दीपक भया॥
परगट दीन दयाल,
कबीर तन्तू तूं भया।
मुझ में रही न हत,
वारो तेरो नाम पर॥
जिन्ह देखा सब त्त,

दो० सब्दहि मों सुर्तों करी,

मिला तत्व मो हंस ।
हंस सब्द मो मिलरहा,
तब तो भया निसंस ॥
सुर्त सब्द जब एक भया,
तब मन अंत न जाय ।
पांच सीख पिउ पिउ कहे,
सुमिरे हृदय लगाए ॥
सब्दहि मो सुर्तों करी,
पायो नाम अमान ।
ताही सुर्त कबीर का,
पाया पद निर्वान ॥
दो० पारस रुपी नाम है,
लोह रुप संसार ।
पारस पायापार खी ॥
देखि परख टकसार,
सुर्त समाना शब्द मों,
निज घर पहुंचा जाय ।
कहें कबीर बिचारकें,

फिर को आवे भाय ॥
दीन सभे सुभ दीन है,
बार सबे सुभ बार ।
भद्रा तब हीं जानिये,
जो भूल्यौ सिरजन हार ॥
शब्द हि पाया निरख के,
करे निरंन्तर बास ।
कहें कबीर मिल जाइये,
नाम लेत हर स्वांस ॥
सत्त नाम निज औषदी,
सत गुरु दियो बताय ।
औषद खावे पथ रहे,
ताको वेदन जाय ॥
यह औषद जो अंग लगे,
केता उधरे जीव ।
जो जो फिरै कुपन्थ को,
ताहि न औषद पीउ ॥

शब्द बिरहुली ।

सन्तो दोब्धा कहां से आई ।
नाना भांति बिचार करे कोई,
दो मत कौन उडाई ॥
रिग कहैं निराकार निरलेपा,
अगम अगोचर आहीं ।
आवे न जावे मरे न जीवे,
रंग रूप कछु नाहीं ॥
जुजुर कहें एक ब्रह्म अखंडित,
द्वितीया और न कोई ।
आपे आप रमे परमेश्वर,
सत्त पदारथ सोई ॥
शाम कहे सगुण परमेश्वर,
दस औतार धराई ।
गोपी के संग रहत सर्ब मों,
बेद पुरानन गाई ॥
अथर्वन कहे प्रपंच दिसे,
कछु सत्त पदारथ नाहीं ।

जो उठि जावे बहुरि न आवे,
मर मर कहां समाहीं ।
यह प्रपंच सभन मिलि कीन्हा,
जस अंधरन को हांथी ॥
सत्त शब्द कोऊ नहिं बूझे,
करि दुरमति को साथी ।
भयो सब काहु को ज्ञान । काकी
सुनिये धरिये ध्यान ॥ अंधरन को हाथी
जस तस जगत को ज्ञान । हाथ कि
टोइ सब कहैं पै आंख की देखी मान ॥
साखी । खानी बानी कह समझावो ।
गूंगे के गुर भाई ।
दृष्टि में आवे मुष्टि न आवे,
बानी से है न्यारा ।
कहैं कबीर कल्प है परले,
सो पद कोइहि प्यारा ॥
दो० राई भर निज वस्तु है,
आधी राई थूल ।

लहलहात घट भीतरे,
येही स्वांस का मूल ॥
अग्र सोहं गम नाम है,
सुर्त सोहं गम डोर ।
बिछुड़े हंसा लोक का,
पहुंच सुरत कर जोर ॥
अग्र सोहं गम नाम है,
सुर्त सोहं गम डोर ।
सार शब्द है गूंज मों,
सो लख पावे मोर ॥
शब्द सरूपी तूं अहै,
और हौं शब्द के साथ ।
अंत फलेंगे साहुली,
ऊपर का सब बाद ॥
तूं शब्द तूं शब्द का,
तूं मत जाव फराक ।
जो चाहो निज तत्त को,
तो शब्दे लेहु पराख ॥

हीरा परखे जाहुरी,
शब्द परखे साध।
दास परखे साधु को,
जा को मता आगाध ॥

औरदेखो।

अहिंसा परमों धर्मः
अहिंसा परमो सुखः।
अहिंसा परमों जंगः
न हिंसा च कर्तव्यम् ॥

देखो-यह मनुष्यके वास्ते परम धर्म है।

और देखो-ब्राह्मणो के धर्म को ब्रह्मा जी कहा है ऐसा धर्म ब्राह्मणोको करना चाहिए और इस धर्म पर रहना चाहिये और ब्राह्मणो को बेद विद्या अवश्य के पढ़ना चाहिए।

दो० मंगल करनी नहिं करी,
ना कुछ करी उपाय।
परमेश्वर दाया करी,

आप लियो अपनाय ॥
सत गुरु तो दाया निधि,
कृपा सिन्धु का रूप ।
जो सरनागत जावोगे,
पावो ज्ञान अनूप ॥

चौ० बड़े भाग्य मानुष तन पाये ।
बेद पुराण सत ग्रन्थन गाये ॥
नर तन पाय चेत नहिं करसी ।
नाहक अंध कूप मो परसी ॥
अब तुम देखहु हृदय बिचारी ।
गुरु सम जग मोको हितकारी ॥
ताते गुरुपद गहिये भाई ।
गुरु के दया मुक्ति हो जाई ॥

देखो ।

चौ० गुरु की महिंमा कही न जाई ।
बेद पुरान गुन सके न गाई ॥
सो भक्तन पर रहे सहाई ।
दीन दयाल सदा सुख दाई ॥

गुर से नेह करे जो कोई ।
आवागवन मिटे सुख होई ॥
अस बिचार चेतो हो भाई ।
जाते आवागवन नसाई ॥
जो कोई यह मत गहिहैं भाई ।
ताको सभ बिधि होत भलाई ॥

इति श्री
सत्तगुरो का बचन मंगल प्रकास सम्पूर्णम् ।